वेदों की
ओर
लौटो।

।। ओ३म् ।।
।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक
पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
**मासिक मुखपत्र**

# वैदिक गर्जना

वर्ष २० अंक ०१ - १० जनवरी/फरवरी २०२०

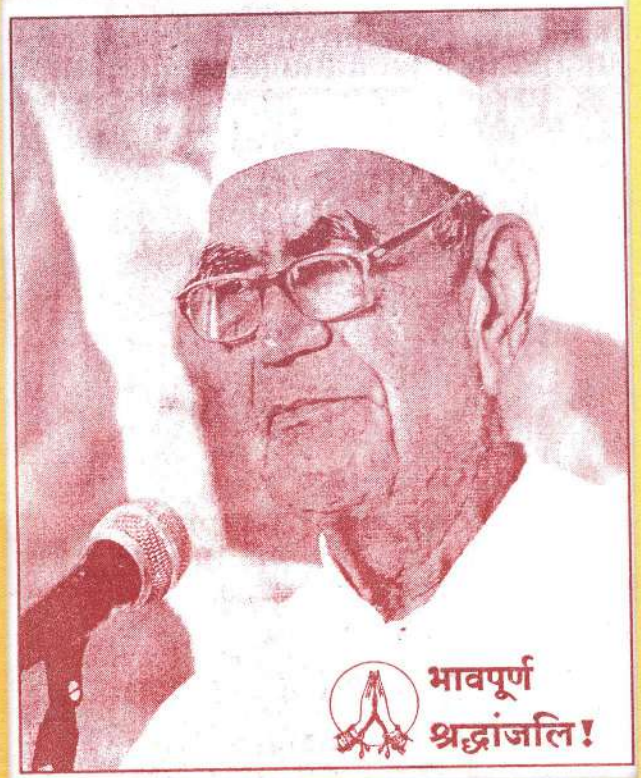

भावपूर्ण
श्रद्धांजलि!

वेद व्याकरण एवं दर्शनों के ज्ञाता, महान पण्डित
आचार्य सत्यानन्दजी 'वेदवागीश'

उस्मानाबाद के अ.भा.मराठी साहित्य संमेलन में वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र।

नि:शुल्क वितरण हेतु प्रकाशित आर्य समाज ट्रैक्ट का विमोचन।

ग्रन्थ वितरण करते हुए आर्य कार्यकर्त्ता श्री प्रभाकरराव निपाणीकर।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

# वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२० कलि संवत् ५१२० विक्रम संवत् २०७६

दयानन्दाब्द १९५ पौष/माघ १० जन./फरवरी २०२०



| प्रधान सम्पादक | मार्गदर्शक सम्पादक | सम्पादक |
|---|---|---|
| **राजेन्द्र दिवे** | **डॉ.ब्रह्ममुनि** | **डॉ.नयनकुमार आचार्य** |
| (९८२२३६५२७२) | | (९४२०३३०१७८) |

सहसम्पादक **प्रा.देवदत्त तुंगार**(९३७२५४१७७७), **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर**(९८८१२१५६१६), **ज्ञानकुमार आर्य**(९६२३८४२२४०), **राजवीर शास्त्री**(९८२२९९००११)


## अनुक्रम

**हिन्दी विभाग**


१) श्रुतिसुगन्ध ........ ०४
२) सम्पादकीयम् ........ ०५
३) षड्दर्शनों की वेदमूलकता ........ ०७
४) युवा पीढी से कुछ तीखें प्रश्न ........ १०
५) नागरिकता संशोधन कानून-यथार्थता ........ १४
६) ये नववर्ष हमें स्वीकार नहीं! ........ १६
७) महान् व्यक्तित्त्व- स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी ........ १७
८) समाचार दर्पण ........ १८
९) शोक समाचार ........ १९


**मराठी विभाग**


१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी ........ २३
२) म.दयानंद जयंती व बोधपर्व - एक चिंतन ........ २४
३) सुखाचे स्वरूप व त्याची प्राप्ती ........ २९
४) वार्ताविशेष ........ ३३
५) निधन वार्ता ........ ३५



* प्रकाशक *

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ-४३१५१५

* मुद्रक *

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रू.१००/-

आजीवन रू.१०००/-



इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

# श्रुतिसुगंध

## विजय, यश और ऐश्वर्य किनका ?

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।**
**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्।।**
**(ऋ.३/३३/१७)**

**पदार्थान्वय** – हे मनुष्यों! जैसे हम लोग (**ऊतये**) रक्षा आदि के लिए (**समत्सु**) संग्रामों में (**घ्नन्तम्**) नाश करनेवाले (**उग्रम्**) तेजस्वभावयुक्त (**धनानाम्**) द्रव्यों के (**संचितम्**) और उत्तम प्रकार शत्रुओं को जितनेवाले (**वृत्राणि**) सुवर्ण आदि धनों को (**शृण्वन्तम्**) सुनते हुए को (**अस्मिन्**) इस (**वाजसातौ**) धन और अन्न आदि के विभाग करनेवाले (**भरे**) संग्राम में (**नृतमम्**) उत्तम गुणों से सर्वोत्तम (**मघवानम्**) परम धनवान् और (**इन्द्रम्**) दुष्ट जनों के नाशकर्त्ता की (**हुवेम**) पुकारें और उसके संग से (**शुनम्**) सुख को प्राप्त होवें, वैसे इसकी स्तुति करके आप लोग भी इस को प्राप्त हों।

**भावार्थ**– इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा आदि प्रधान पुरुष, राजविदया में चतुर, योद्धा, न्यायाधीश पुरुषों, प्राङ्विवाकों (वकीलों) और सेवक पुरुषों को सत्कार करके ग्रहण करें, तो उन राजाओं का सदैव विजय, यश और ऐश्वर्य होता है। इस सूक्त में सोम, मनुष्य, ईश्वर और बिजुली के गुण वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के साथ संगति जाननी चाहिए।

**(महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेद भाष्य)**

## * आगामी कार्यक्रम *

*** राज्यस्तरीय स्वास्थ्य रक्षा एवं प्रशिक्षण शिविर**

दि.०२ से ०८ मार्च २०२० तक / स्थान – श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम,परली

*** म.दयानन्द जयंती (१८ फरवरी) एवं ऋषि बोध पर्व(२१ फरवरी)**

स्थान – सभी आर्य समाजें एवं अन्य आयोजन स्थल

*** आर्य समाज गांधी चौक लातूर का उत्सव- अप्रैल २०२० के अन्तिम सप्ताह में।** *** श्रद्धानंद गुरुकुल परली वार्षिकोत्सव-अप्रैल २०२०**

सम्पादकीय

# राष्ट्रहित में विवेकशीलता आवश्यक

समस्या छोटी हो या बडी, उसका मूलभूत कारण हैं अविचार! क्योंकि अविचारों के कारण ही सब की प्रकार की समस्याएं खडी होती हैं, जो कि व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व सारे मानवमात्र को हानि पहुंचाती हैं। इन्हीं अविचारों से ही नानाविध बिमारियां खडी होकर वे हमारा जीना दुष्कर कर देती हैं, इसीलिए महाराज भर्तृहरिजी कहते हैं- **'संसारदीर्घरोगस्य सुविचारों हि महौषधम्।'** समग्र विश्व की दीर्घकालीन असाध्य रोगों के समूल निवारण हेतु विवेकपूर्ण सद्विचार ही सबसे बडी औषधि हैं। आज मानव अनेकों बिमारियों से जकडा है। उससे भी जादा सामाजिक व राष्ट्रीय संकटों ने इसे घेरा है। लेकिन दुर्भाग्य यह कि हमारी व्यवस्था इनके ईलाज के लिए समस्या के मूल तक नहीं पहुंचती। इनका समाधान केवल अस्थायी रूप में तलाशना चाहती है। वह 'मूल का भूल' को जानना व समझना नहीं चाहती। इसी कारण समस्या वहीं की वहीं रह जाती है। इनका पूर्णत: स्थायी समाधान तो महर्षि दयानन्द ने वैदिक विचारों द्वारा किया था। स्वामी की दृष्टि में वैदिक विशुद्ध ज्ञान की अप्रवृत्ति होने से ही भूगोल में अविद्यान्धकार का विस्तार हुआ और मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर मनमानें मत-सम्प्रदाय चले पडे। इन्हीं वेदविरुद्ध मतों ने मानवसमाज को दु:खसागर में प्रवाहित किया है। यदि ये मत-पन्थ न होते तो विश्व में सुख-शान्ति की सरिता प्रवाहित होती।

हमारे देश में इस समय साम्प्रदायिता की भयंकर विषाक्त बेल बेशुमार बढती जा रही है। नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) और राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर(एनआरसी) को लेकर सम्प्रति सारे देश में अस्थिरता का माहौल है। इनके विरोध में प्रदर्शन व आन्दोलन चल रहे हैं। संसद में पारित 'नागरिकता संशोधन कानून' की यथार्थता को समझने व समझाने का प्रयास यदि विपक्ष के लोग सामंजस्यता के साथ करते, तो आज देश में अशान्ति का वातावरण उत्पन्न न होता। आज दिल्ली के शाहीन बाग में क्या हो रहा है? जामिया मिलीया कॉलेज और जेएनयू में छात्रों द्वारा राष्ट्रविरोधी नारे दिये जा रहे हैं। यह सब चल रहा है संविधान की दुहाई देकर! यह कदम संविधान के विरोध में नजर आता है, तो फिर अन्य संवैधानिक तत्त्वों का पालन क्यों नहीं होता?

ऐसे तणावपूर्ण व गम्भीर वातावरण में विपक्ष व सत्ता पक्ष के लोगों को संयम से काम लेना चाहिए। ये बिकट स्थितियां उत्पन्न हुई है, हमारी ही ऐतिहासिक गलतियों के कारण! इन्हें यथासमय सुधारा नहीं गया, इसलिए आज इसके परिणाम देश को भोगने पड रहे हैं। स्वन्तत्रता के बाद सर्वाधिक शासन करनेवाली कांग्रेस सरकारें यदि साम्प्रदायिकता की संकीर्ण राजनीति न अपनाती, तो बहुत सारी मुसीबतें खडी न होती। देश के सर्वहित व कल्याण के लिए सीएए जैसे कानून का समर्थन कांग्रेस सहित वामपंथी व अन्य विपक्ष पार्टियां करती, तो देश में आज बिघडती स्थितियाँ खडी न होती। ऐसे में दोनों पक्ष के नेता लोग विघातक बयानबाजी कर जनता को भडका रहे हैं, जिससे दो समाज में पहले से जो सद्भाव, मित्रता व भाईचारे का वातावरण था, उसपर आँच आ रही है। जगह-जगह राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। यह बिल्कुल अनुचित है। इसी माहौल को देखकर सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश शरदजी बोबडे ने टिप्पणी करते हुए कहा है - 'आज इस समय सारा देश कठिन स्थितियों से गुजर रहा है।' उनका कहना है कि जब संसद ने सीएए का कानून बना ही दिया है, तो इसकी वैधता के लिए सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की आवश्यकता ही क्या? जो करना था वह सोच समझकर किया है।'

देश के विचारविदों व सभी तत्त्वचिन्तकों से विचारविमर्श कर भविष्य में होनेवाले दुष्परिणामों पर विचार होता, तो स्थितियां कुछ और बन जाती थी। आज देश का माहौल सर्वदृष्टि से सौहार्दपूर्ण बनें इसके लिए सभी को प्रयत्न करना आवश्यक है। देश के हित में विपक्षों का सहयोग, सकारात्मक दृष्टिकोण एवं कल्याण की भावना अपेक्षित होती है, जिससे राष्ट्र की साम्प्रदायिक समस्या दूर होकर देश प्रगतिपथपर चल सकें। आज के नागरिकता संशोधन कानून के विषय में विपक्ष को उचित है कि सारी भ्रामकता को दूरकर सच्चाई को स्वीकार करें और सरकार का पूरा समर्थन करें। और साथ ही इन परिस्थितियों में दोनों पक्ष के बुद्धिजीवियों व विद्वानों का कर्तव्य है कि इसकी यथार्थता को जानते हुए सामान्य लोगों में जनजागरण करें। क्योंकि हिंसा, लडाई तथा आपस में संघर्ष ये सारी बातें मनुष्यता के विपरीत है। यदि इस कानून में सभी का हित समाहित है और देश विघटनकारी समस्याओं से बचनेवाला है, तो सहृदयता के साथ सभी ने सरकार के इस कदम का स्वागत करना ही चाहिए।

- नयनकुमार आचार्य

# षड्दर्शनों की वेदमूलकता

– डॉ.विमलकुमार आर्य(वैदिक प्रवक्ता,हरदोई)

महर्षि दयानन्द से पूर्व षड्दर्शनों के सन्दर्भ में मान्यतायें अलग-अलग थी। ऋषियों के अतिरिक्त किसी सामान्य व्यक्ति ने संस्कृत भाषा में जो कुछ लिख दिया, उसे वेदवाक्य या शास्त्रों अर्थात् षड्दर्शनों में से किसी का लिखा या कहा हुआ मान लेते थे। यह सारा गोरख धन्धा वेदज्ञान के अभाव में तो होता ही था। साथ-साथ दर्शनों पर... चाहे अध्ययन न भी किया हो, फिर भी संस्कृत में कोई वाक्य या श्लोक गढ देते या उद्धृत कर देते और घोषित करते कहते कि **'यह वेदवाक्य है'** या **'शास्त्रों में ऐसा ही लिखा है'**, वे किस ऋषि और कौन से शास्त्र अर्थात् दर्शन का है, इस बात को स्पष्ट नहीं करते थे। फिर वेद की बात तो दूर की ही हो गयी। ऋषि दयानन्द के आगमन से ही वेद परमात्मा वाणी सिद्ध हुए। सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि दयानन्द ने वैदिक दर्शनों के दृष्टिकोण को विशेष प्रकार से समझाने का प्रयत्न किया।

वेदों को ज्ञानराशि का मूल वृक्ष बताया। उसकी शाखाएं व प्रशाखाएं वेदांग, षड्दर्शन और उपनिषदें हैं। इसलिए 'पातंजल योग प्रदीप' (ओ३मानन्द सरस्वती कृत) ग्रंथ जिसका सम्पादन पं.गंगाप्रसाद चीफ जज टिहरीवालों ने किया था। प्रथम संस्करण वैदिक यंत्रालय अजमेर ने ही प्रकाशित किसा। दूसरा संस्करण गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ के द्वितीय परिच्छेद में 'प्राक्कथन' में कहा गया है कि – 'महर्षि दयानन्द सरस्वती इस युग के प्रथम आचार्य हैं, जिन्होंने ईश्वर के गौणिक नामों तथा षड्दर्शनों के अलग-अलग मान्यताओं के आधारपर विघटित सम्प्रदायों में विभक्त समाज को एकता के सूत्र में बाँधने को प्रयत्न किया है।'

स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने साहित्य में पहले वेद मन्त्रों के प्रमाण देते हैं। जैसे अष्टम समुल्लास में सृष्टि विषय पर ऋग्वेद मं.१०, सू.१२९ मं.८, ऋ.मं.१०, सू.१२९ मं.१, यजुर्वेद ३१ अ.२ के उद्धरण देकर पश्चात् ऋषियों के सूत्रों से प्रमाणित करके कोई विषय स्पष्ट समझाते हैं। यह शैली पूर्ववर्ती किसी विद्वान् में नहीं मिलती। यही कारण रहा कि वेदों की गूढ विद्याओं का प्रकाश जनता के बीच नहीं आ सका, जिससे नास्तिकता और अविद्या ही बढी।

'पाणिनि' के अनुसार जिज्ञासा का अर्थ है जानने की इच्छा! किसको जानने की इच्छा? उस धर्म को जानने की इच्छा पूर्व मीमांसा दर्शन में जैमिनि मुनिने प्रारम्भ में कहा 'अथतो धर्मजिज्ञासा।'(१-१-१)

अब धर्म (अर्थात् करणीय कर्म) जानने की (इच्छा है) जिज्ञासा है। इस जिज्ञासा का उत्तर देने के लिए १६ वे अध्याय व ६४ पादवाल ग्रन्थ लिखा गया। उदारहण के लिए जैसे वृक्ष की लकडी से कोई सुयोग्य बढई कुर्सी, मेज व अन्य उपयोगी वस्तुएं बनाता है। उस बढई ने मनुष्य के लिए उपकार का कार्य कल्याण के लिए किया है। इसी तरह कर्मों की व्याख्या भी इस दर्शन में की गई है। इसी प्रकार ब्रह्मसूत्र(उत्तर मीमांसा) में जब मनुष्य जीवनयापन करने लगता है, तो उसके मन में दूसरी जिज्ञासा उठती है, वह जिज्ञासा **'ब्रह्मजिज्ञासा'** है। इसलिए ब्रह्मसूत्र का प्रथम सूत्र 'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा' है।

पहली जिज्ञासा धर्म की थी, दूसरी जिज्ञासा जगत् का मूल कारण जानने की (ज्ञान से) थी! इस दूसरी जिज्ञासा का उत्तर ही ब्रह्मसूत्र या उत्तरमीमांसा है। इस ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय व १६ पाद हैं। इसमें बताया गया है कि तीन ब्रह्म अर्थात् मूल पदार्थ हैं - प्रकृति, जीवात्मा, परमात्मा! ये तीनों अनादि हैं, इनका आदि व अन्त नहीं है। इसकी वेदमूलकता ऋ.मं.१ सू.१६४ मं. तथा २० में तथा यजुर्वेद अ.४०मं ८ में है। इसी प्रकार सत्त्व, रज, तम की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है। यह सांख्यदर्शन के अन्तर्गत आती है। आचार्य कपिल इसके प्रणेता हैं। परमात्मा का तेज परमाणु की साम्यावस्था को भंग करता है, जिससे असाम्यावस्था भंग होती है। तथा इसी से रचना कार्य प्रारम्भ होता है। अहंकार व पंचमहाभूत इसी के ज्ञानक्षेत्र में आते है। संक्षेप में इतना ही सम्भव है।

**मूलपदार्थ** - परमात्मा, जीवात्मा, प्रकृति का वर्णन तो ब्रह्मसूत्र में है। ये तीन पदार्थ ब्रह्म कहाते हैं। प्रकृति के परिणाम अर्थात् रूपान्तर दो प्रकार के हैं। महत्, अहंकार, तन्मात्रा तो अव्यक्त हैं। इनका वर्णन सांख्य में है। परिमण्डल, पंचमहाभूत तथा महाभूतों से बनें चराचर जगत् व इससे बनें सब पदार्थ व्यक्त पदार्थ कहाते हैं, इन पदार्थों का वर्णन कणादमुनि ने वैशषिक दर्शन में किया है।

सत्य की खोज के लिए सोलह तत्त्व हैं। उन तत्त्वों के द्वारा किसी पदार्थ की सत्यता का पता किया जा सकता है-१) प्रमाण, २)प्रमेय, ३) संशय, ४) प्रयोजन, ५) दृष्टान्त, ६) सिद्धान्त, ७)

अवयव, ८) तर्क, ९) निर्णय, १०) वाद, ११) जल्प, १२) वितंडा, १३) हेत्वाभास, १४) छल, १५) जाति, १६) निग्रहस्थान! इन सबका वर्णन न्याय दर्शन में है। इस प्रकार न्यायदर्शन को तर्क करने का व्याकरण भी कहा जा सकता है। वेदार्थ जानने में तर्क का विशेष महत्त्व है और यह वेदार्थ करने में सहायक है। **तत्त्वज्ञानान्निः श्रेयसाधिगमः** (न्यायदर्शन) अर्थात् सोलह तत्त्वों से निःश्रेयस् की प्राप्ति होती है। योग दर्शन जीवात्मा का सत्य के साथ संयोग अर्थात् सत्य की प्राप्ति का उपाय है।

**'तप स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।'** (योग२-१)

अर्थात् तप, स्वाध्याय और परमात्मा के आश्रय से योग का कार्यक्रम हो सकता है। इससे ही अध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ-साथ जानता है, वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तरके विद्या अर्थात् पदार्थज्ञान से मोक्ष को प्राप्त रहता है। (यजुर्वेद ४०-१४) यजुर्वेद का ४० वा अध्याय वेदान्त दर्शन का मूलाध्याय है। वेदान्त दर्शन के प्रणेता व्यास मुनि हैं।

यह उपरोक्त षड्दर्शन वैदिक दर्शन है और ये वेदरूपी वृक्ष की यह शाखाएं है। इसलिए वेदमूलक होते हुए वैदिक दर्शन हैं। वेद ईश्वर की वाणी होने से आस्तिक दर्शन यह षड्दर्शन है। ऋषि दयानन्द ने तर्कयुक्त षड्दर्शनों को वेदमूलकतापरक सिद्ध किया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

– दूरभाष–९४५१२०९६०२

## नागरिकता संशोधन कानून का स्वागत...!

भारतीय संसद के दोनों सदनों में नागरिकता संशोधन विधेयक (सीएए) पारित हुआ और यह नया कानून बनकर राष्ट्रीय इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ बन गया। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदीजी एवं गृहमन्त्री श्री अमितभाई शहा के सफल प्रयासों से देश के हित में यह कानून लागू हुआ है, यह बहुत ही हर्ष का विषय है। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा तथा राज्य की सभी आर्य समाजें इस नये कानून का स्वागत करती है और देश की मोदी सरकार का हृदय से अभिनन्दन करती है। सभी देशवासियों का कर्तव्य है कि, इस कानून का पालन करते हुए सरकार को सहयोग करें।

* * *

# युवा पीढी से कुछ तीखे प्रश्न

– पं.रामनिवास 'गुणग्राहक'

मैं अपनी बात का प्रारम्भ रहीम के एक बहुमूल्य दोहे के साथ करना चाहता हूँ। पाठक गण सोचकर देखें कि इस दोहे को लिखते समय की मन:स्थिति क्या रही होगी –

**कहि रहीम मुश्किल परी, गाढे दोऊँ काम।**
**सांचे ते तौ जग नहीं, झूठे मिलें न राम।**

रहीम के अनुसार सच बालें तो संसार के नहीं रहते और झूठ बोलें तो ईश्वर नहीं मिलता। करें तो क्या करें? रहीम की यह मनोव्यथा तब से लेकर आज तक हर उस व्यक्ति को व्यथित करती है, जो सत्य बोलना और सत्य ही सुनना चाहता है। बुद्धिजीवी–विशेषत: सहित्यकार लेखक व कविगण अपने माने हुए सत्य को ही परम् सत्य सिद्ध करने में ही लगे रहते हैं। भिन्न–भिन्न विचारधारावालों के साथ बैठकर विचार–विमर्श की परम्परा अपनी अन्तिम सांस ले चुकी लगती है। आज विचार–भिन्नता को बुद्धिजीवी कहलानेवालों में विरोध की सजा दी जाती है। यही कारण है कि किसी भी समाज के विविध पक्षों का सन्तुलित विश्लेषण हमारी कार्यशैली में नहीं दीखता। समाज के जीवन–मरण से जुडे गम्भीर प्रश्नों को खिलवाड की तरह लिया जाता है। पता नहीं क्यों हमारा बुद्धिजीवी वर्ग यह सोच और देख नहीं पा रहा है कि भारत चाहें समृद्धि और संसाधनों की दृष्टि से विश्व की तीसरी, दूसरी व पहली शक्ति बन जाए, वैज्ञानिक उन्नति करते हुए चन्द्रमा पर कॉलोनी बना ले, लेकिन जातिवाद और जनसंख्या विस्फोट की अनदेखी करते रहे, तो एक दिन आपस के संघर्ष और भुखमरी के हाथों हमारा सबकुछ नष्ट भ्रष्ट होकर रह जाएगा। इस सच से आँखे बन्द करके आरक्षण के लए जातीय वैमनस्य को जैसे तैसे ढोते रहना तथा जनसंख्या नियंत्रण को समुदाय विशेष के साथ जोडकर देखना देश के लिए आत्मघाती होगा।

ऐसी गम्भीर समस्याओं के स्थायी समाधान छोटी और जाति, समुदाय व सम्प्रदाय में बँटी सोच से नहीं निकाले जा सकते। मानवतावादी सोच रखकर सत्य के लिए संघर्ष करने का साहस रखनेवाले उदार चेता लोगों को ऐसी बिकट समस्याओं के लिए काम करना पडेगा। ऐसी ही एक विकट समस्या है अन्तर्जातीय वैवाहिक सम्बन्ध। लेखक भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति का सच्चा सेवक, प्रचारक और प्रतिनिधि है।

वैदिक संस्कृति वर्तमान जातिवाद को एक सामाजिक कुरीति के रूप में मानती है। वैदिक संस्कृति में जातिवाद, ऊँच-नीच के भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं है। वैदिक संस्कृति का संवाहक आर्य समाज आज भी संविधान की मर्यादा में रहकर अन्तर्जातीय विवाह कराता है, मगर समाज में इसे लेकर जो अप्रिय वातावरण बन रहा है, उस पर आज कुछ गम्भीर प्रश्न खडे होते हैं। ध्यान रहे अन्तर्जातीय विवाहों की समस्या कोई सवर्ण-अवर्ण को लेकर ही नहीं है। जाट-राजपूत, ब्राह्मण-वैश्य में भी है। आरक्षित वर्ग से आनेवाले, यादव-मीणा, कुम्हर-धोबी आदि सब मिलकर आरक्षण के नाम पर भले ही लड लें, लेकिन एक दूसरे के साथ विवाह-सम्बन्ध करने के नाम पर ये एक दूसरे से उतने ही दूर हैं, जितने ब्राह्मण और जाट या जाट और यादव! संविधान में आरक्षण प्राप्त जातियों के लोग भी आपस में विवाह सम्बन्ध करने लग जाए तो देश की बहुत बडी समस्या हल हो जाए। लगता है कोई भी इस दिशा में एक कदम आगे बढाने के बारे में सोचना ही नहीं चाहता। आश्चर्य तो देखिये कि सिद्धान्त के रूप में जातिवाद का समर्थन आज कोई सार्वजनिक रूप से नहीं कर सकता, अगर व्यावहारिक स्तरपर जातिवाद मिटाने के लिए कोई एक कदम आगे बढाने का साहस नहीं दिखा पाता। इसे कहते हैं विचारों और भावनाओं का संघर्ष! यह है परम्परा और प्रगतिशीलता की खींचातानी! हमें इनसे ऊपर उठना ही होगा।

क्या कारण है कि जन्म आधारित जातिवाद के विरुद्ध अभियान चलाकर गत १००-१२५ वर्षों से अन्तर्जातीय विवाह कराने में सबसे आगे रहनेवाले आर्य समाज के एक सेवक को आज अन्तर्जातीय विवाहों को लेकर प्रश्न खडे करने पड रहे हैं। अभी बरेली के एक विधायक की पुत्री ने आरक्षित वर्ग में उठनेवाली किसी (अजात) जाति के युवक से प्रेम विवाह कर लिया। टी.वी. चैनलों से पता चला कि उन दोनों ने अपने-अपने माता-पिता से इस सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं की। लडके के पिता का कहना है कि वह मुझसे बात करता तो मैं लडकी के पिता से चर्चा अवश्य करता। यह सब जानकर भी किसी ने उन दोनों से यह नहीं पूछा कि क्या १८ वर्ष की आयु के बाद माता-पिता इतने अप्रासंगिक हो जाते हैं कि विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण विषय को लेकर उनकी ऐसी घोर उपेक्षा कर दी जाए? क्या १८ वर्ष की पुत्र-पुत्रियों का माता-पिता के प्रति

कोई उत्तरदायित्व नहीं बनता। क्या १८ वर्ष के बाद पुत्र-पुत्रियों को १८ वर्ष तक हमारा सर्वविधि पालन-पोषण करनेवाले माता-पिता के प्रति इतना कृतघ्न हो जाना चाहिए कि उनकी मान-मर्यादा को पैरों तले दिया जाए?

सम्भवत: २०१० के आस-पास की बात है। टी.वी. पर हरियाणा में 'ऑनर किलिंग' विषय पर चर्चा चल रही थी। युवा पीढी से विचार जानने के लिए युवक-युवतियाँ आमंत्रित थे। संचालक (एंकर) ने एक युवक से पूछा कि माता-पिताओं का कहना यह है कि हमारे पुत्र-पुत्रियाँ समाज की समस्याओं के विरुद्ध जाकर विवाह करते हैं, तो हमें समाज में भला बुरा सुनना पडता है, अपमानित होना पडता है। क्या युवा पीढी को उनकी इस स्थिति पर नहीं सोचना चाहिए? इस प्रश्न पर एक युवक ने जो उत्तर दिया, उसे सुनकर मेरा हृदय काँप उठा। युवक कहता है- यह समस्या उनकी है, हमें इससे क्या लेना-देना? अगर उनके सामने ऐसी समस्या आती है, तो वे स्वयं जाकर किसी कुए-तालाब में डूबकर आत्महत्या कर लें, हमारी जान क्यों लेते हैं? तब भी वहाँ किसी ने उसे डाँट फटकर न लगाई हाय! किस युग में जी रहे हैं हम? माना की हमारे माता-पिता परम्परा से चली आ रही समाज की कुछ कुरीतियों में जकडे हुए हैं तो शिक्षित और विचारशील युवकों को मिलकर हमें जन्म और जीवन देनेवाले माता-पिता को समझाकर विश्वास में नहीं लेना चाहिए? मेरे पास भी ऐसे कई युवक-युवतियाँ विवाह के लिए आते रहे है। मैं उन्हें कहता हूँ कि चोरी छिपे विवाह कराकर इधर-उधर भागते फिरोगे, इससे अच्छा रहेगा कि किन्हीं प्रभावशाली लोगों, रिश्तेदारों के द्वारा पारिवारिक सहमति बनाओ। समाज में शिक्षित, विचारवान और उदारमतवादी व्यक्ति भी होते हैं, अगर आप उनसे जाकर मिलो, तो आपकी गलती देखकर आपको समझाएँगे या परिवारवालों को समझाएँगें। सडक-नालियों की सफाई और पार्कों की देखरेख तक के लए समितियाँ बना लेते हैं, क्या दो पीढियों के वैचारिक टकराव को दूर करके परिवार-समाज में अपनापन बनाऐं रखने के लिए ऐसा कोई समूह नहीं बनाया जा सकता? हमें इस दिशा में भी कुछ करना चाहिए।

बडी कडवी सच्चाई यह है कि हमारी युवा पीढी को नैतिकशिक्षा और चारित्रिक संस्कार आज कहीं से विधिवत् नहीं मिल पा रहे। एक शोकदायक आश्चर्य देखिये कि भी विद्यालयों को टी.सी. व

अंकतालिका के साथ एक चरित्रप्रमाण भी देना होता है। क्या किसी विद्यालय में चरित्र-निर्माण की दृष्टि से कुछ सिखाया-पढाया जाता है? यदि नहीं तो प्रमाणपत्र क्यों? जो सिखाया-पढाया ही नहीं, उसका प्रमाणपत्र किस आधार पर दिया जाए? निष्कर्षत: आज की पीढी इतनी संस्कारविहीन हो जाए कि अपने जन्मदाता, पालक-पोषक, सुख-दु:ख में साथ हँसने-रोनेवालों की भावनाओं, पारिवारिक व सामाजिक सन्मान की चिन्ता करना ही छोड दे और हम बुद्धिजीवी कहलानेवाले लिखने-पढने, सम्मेलन-समारोह करने में ही लगे रहें, तो यह अपने कतव्यों की आत्मघाती उपेक्षा सिद्ध होगी। माता-पिता, भाई-बहन जैसे रक्त सम्बन्ध ही टूट कर बिखरने लगेंगें, तो ऐसे लोग सामाजिक सद्भाव और राष्ट्रीय अखण्डता की सुरक्षा कैसे कर पायेंगे?

– आर्य समाज, श्रीगंगा नगर,
राजस्थान मो.९०७९०३९०८८

* * *

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

**स्व.धर्मपालजी भक्सीन (लन्दन) एवं**
**स्व.श्रीमती शान्तिदेवी मायर लन्दन क पावन स्मृति में**

-* प्रान्तीय स्वास्थ्यरक्षा एवं चिकित्सा शिबिर *-

**स्थल:संजीवनी आरोग्य मंदिर,स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली-वै.**

**दि.०२ मार्च २०२० से ०८ मार्च २०२० तक**

*** शिबिर के मार्गदर्शक ***

* प्रमुख मार्गदर्शक:-आयुर्वेद विशेषज्ञ वैद्य पू.विज्ञानमुनिजी मो.9975375711
* व्याख्याता - पं.सुधाकरजी शास्त्री, प्रा.डॉ.वीरेन्द्र शास्त्री, पं.लक्ष्मणराव आर्य, डॉ.नयनकुमार आचार्य, प्रा.अरुण चव्हाण, भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान
* सहयोगी - शिवदास नागरगोजे, आर्यमुनिजी, माता सेवायति, ब्र.ओम आर्य

इस शिबिर में -विभिन्न शारीरिक, मानसिक विकारों पर आयुर्वेद, निसर्गोपचार एवम् योग के माध्यम से चिकित्सा होगी। शोधन, शमन और पूरण के साथ ही आसन-प्राणायाम, षट्क्रिया आदियों द्वारा रोगमुक्ति एवं पूर्ण शरीरशुद्धी। * महिलाओं के लिए पृथक् व्यवस्था।

**प्रवेश शुल्क**
**रू.2100/-**

# नागरिकता संशोधन कानून - यथार्थता

- राजेन्द्र दिवे(मन्त्री,महाराष्ट्र आ.प्र.सभा)

समय रहतेही छोटेसे घाव पर इलाज न किया जाय, तो वह आगे चलकर नासूर बन जाता है, फिर उसे शस्त्रक्रिया द्वारा हटाने से ही काया निरोगी व स्वस्थ हो सकती है। हमारे राष्ट्ररूपी शरीर की भी यही अवस्था है। कईं समस्याओं के मूल कारणों को जड से उखाड फेंकने का कार्य पिछले कईं वर्षों में नही हो सका, जब कि अब यह कार्य देश की मोदी सरकार ने बडी सूझबूझ व साहस के साथ कर दिखलाया है, तो इसके के लिए विपक्षी दलों का भी पूरा समर्थन मिलना चाहिए। लेकिन संकुचित भावना व वोट बैंक की राजनीति के चलते सभी विपक्षी दलों में इतनी उदारता कहाँ? उन्हें तो देशहित के बजाय स्वकीर्णता ही प्रिय लग रही है। धारा ३७० को कश्मीर से हटाना, श्रीराम जन्मभूमि विवाद निपटाना तथा देश की सुरक्षितता हेतु प्रभावशाली कदम उठाना आदि मुद्दों पर ऐतिहासिक सफलता हासील करने के बाद मोदी-शहा ने देश में नागरिक संशोधन कानून(सीएए) गत १२ दिसम्बर लागू कर दिया। इस सर्वहितकारी निर्णय का सभी ने स्वागत करना चाहिए था, किन्तु जनता में विशेषत: मुस्लिमों में भ्रम फैलाकर देश को अस्थिरता के द्वार पर खडा करने का अनिष्ट कार्य कांग्रेस, वामपन्थी व अन्य विपक्षी दलों तथा कुछ धार्मिक व सामाजिक संगठनों द्वारा हो रहा है। यह महती चिन्ता का विषय है। लेकिन देश की जनता इन वास्तविक तथ्यों को भलीभांति समझती है। जो बात कांग्रेस शासनकाल में होनी चाहिए थी, आज देरी से क्यों न हो, पूर्ण हो रही है! इसे सभी ने हृदय से स्वीकारना चाहिए..।

इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि साम्प्रदायिक अलगाववाद व त्रासदी का बीजारोपण ही भारत-पाकिस्तान के विभाजन के समय में हुआ था। अंग्रेज देश से चले जाते समय बैरिस्टर जीना ने 'टू नेशन' संकल्पना प्रस्तुत की। जिसके अनुसार धर्म(सम्प्रदाय) के आधार पर मुस्लिमों के लिए पाकिस्तान और हिन्दुओं के लिए भारत देश बना, जो कि इतिहास की बहुत बडी गलती थी। उस समय पाकिस्तान में रहें हिन्दु विस्थापितों पर क्या-क्या अत्याचार हुए? यह सब दुनिया जानती है। इन घटनाओं के चलते दोनों देशों में रहनेवाले अल्पसंख्यकों पर अत्याचार न हो, इसलिए इ.स.१९५० में पं.नेहरुजी और लियाकत अली खान इन दोनों में दिल्ली में करार हुआ, जिसे

'दिल्ली पॅक्ट' के नाम से जाना जाता है, इसी के अनुसार उन-उन देशों में रहनेवाले अल्पसंख्यकों के अधिकारों की पूरी रक्षा हो व उन्हें सन्मानपूर्वक जीवन प्रदान करने तथा जबरन धर्मान्तरण रोकने का निर्णय हुआ। तदनुसार दोनों देशों में अल्पसंख्यक आयोग भी स्थापित हुए। जिनका पालन भारत में तो हुआ, लेकिन पाकिस्तान में कतई नहीं हुआ। धार्मिक कट्टरता के आधारपर खडे पाकिस्तान में हिन्दू, जैन, बौद्ध, सीख, पारसी आदियों पर दिन प्रतिदिन अत्याचार होने लगे। उनका जीना दुष्कर हो गया। अल्पसंख्यकों का धर्मान्तरण करना, उनकी जमीन हडपना, उनके अधिकारों को हनन, बलात्कार, लूट आदि अत्याचारों को वे कहां तक सहते...? ऐसा होता रहा अफगानिस्तान और बांगलादेश में भी!

परिणामस्वरूप उन सभी अत्याचारपीडित समुदायों ने अपनी रक्षा हेतु गत ७०-७२ वर्षों से भारत में शरण ली है। यदि उन तीनों देशों में अल्पसंख्यंक लोग आनन्दपूर्वक जीते या उन्हें सम्मानपूर्वक रहने की व्यवस्था होती, तो वे क्यों यहां आतें और न उनके लिए यह कानून बनाने की आवश्यकता पडती! इसके विपरीत धर्मनिरपेक्ष भारत देश में अल्पसंख्यक समुदाय जिनमें मुसलमान, जैन, बौद्ध, पारसी, सीख, ईसाई आदियों को समान रूप से अधिकार हैं। उनपर किसी प्रकार के अत्याचार नहीं होते! यह विचारणी तथ्य है। यह इस नागरिकता संशोधन कानून से उन शरणागत भाईयों को आश्रय देने तथा उन्हें भारतीय नागरिकता प्रदान करने का रास्ता साफ हो जाता है। यह मानवीयता की दृष्टि से बहुतही आवश्यक था। इस कानून का विरोध करना नासमझीवाली बात है। विरोधियों की शिकायत है कि, 'प्रस्तुत संशोधन कानून में मुसलमान समुदाय का उल्लेख क्यों नहीं है? क्योंकि भारतीय संविधान धर्मनिरपेक्षता पर चलता है।

इस पर स्पष्ट उत्तर है कि मुस्लिमों को उन-तीन देशों में सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार विद्यमान है, उनपर वहाँ किसी तरह अन्याय या अत्याचार ही नहीं होते और वे वहां पर सुखपूर्वक जीते है या उनके लिए जब वे स्वतन्त्र राष्ट्र हैं। तो फिर उन्हें यहां पर शरण लेने की आवश्यकता नहीं! इसलिए इस कानून में उनका उल्लेख नहीं और विशेष स्पष्ट बात है कि पूर्व से यहां पर निवास करनेवाले मुसलमान नागरिकों के लिए तो कोई आपत्ति ही नहीं है। उनकी असुरक्षा का तो सवाल ही नहीं है। तब विरोधकों द्वारा इस कानून के विरोध में चलाये जानेवाले

आन्दोलन पूरी तरह गलत है। मोदी सरकार व इस कानून के समर्थक जब जाहिर रूप से कह रहे है तो मुस्लिम भाईयों को किसी तरह की आपत्ति ही नहीं होनी चाहिए। उन्हें तो इस नागरिकता संशोधन कानून का स्वागत ही करना चाहिए। और सर्वत्र असमंजसता का वातावरण है। इस कानून के विषय में फैलाये जा रहे भ्रम को दूर करने की सबसे जादा आवश्यकता है, जिसकी जिम्मेदारी देश के नागरिक पर है, चाहे मिडिया हो, विरोध दल हो, सामाजिक व धार्मिक संगठन हो... या देश का शिक्षाविद समूह! आईये, हम सब मिलकर इस भ्रम को मिटाये और राष्ट्र को बचाये...!

**–'घरकुल', नारायण नगर, लातूर,**
**मो.९८२२३६५२७२**

## ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं!

ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं, है अपना ये त्यौहार नहीं।
है अपनी ये तो रीत नहीं, है अपना ये व्यवहार नहीं।
धरा ठिठुरती है सर्दी से आकाश में कोहरा गहरा है।
बाग बाजारों की सरहद पर सर्द हवा का पहरा है।
सूना है प्रकृति का आँगन, कुछ रंग नहीं, उमंग नहीं।
हर कोई है घर में दुबका हुआ, नव वर्ष का ये कोई ढंग नहीं।
चंद मास अभी इंतजार करो, निज मन में तनिक विचार करो।
नये साल नया कुछ हो तो सही, क्यों नकल में सारी अक्ल बही।
उल्लास मंद है जन-मन का, आयी है अभी बहार नहीं।
ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं, है अपना ये त्यौहार नहीं।
ये धुंध कुहासा छंटने दो, रातों का राज्य सिमटने दो।
प्रकृति का रूप निखरने दो, फागुन का रंग बिखरने दो।
प्रकृति दुल्हन का रूप धार, जब स्नेह-सुधा बरसायेगी।
शस्य-श्यामला धरती माता, घर-घर खुशहाली लायेगी।
तब चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि, नव वर्ष मनाया जायेगा।
आर्यावर्त की पुण्य भूमि पर, जय गान सुनाया जायेगा।
युक्ति-प्रमाण से स्वयंसिद्ध, नव वर्ष हमारा हो प्रसिद्ध।
आर्यों की कीर्ति सदा-सदा, नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा।
अनमोल विरासत के धनिकों को, चाहिये कोई ऊधार नहीं।
ये नववर्ष हमें स्वीकार नहीं, है अपना ये त्यौहार नहीं।
है अपनी ये तो रीत नहीं, है अपना ये त्यौहार नहीं।

**राष्ट्रकवि रामधारीसंह दिनकर**

# महान व्यक्तित्त्व- स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी

**- स्वामी सदानन्दजी सरस्वती**

पूज्य स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज के विषय में क्या लिखूं? वे एक व्यक्ति अपने आप में एक संस्था थे। अनेक सभा, संस्थाओं के जनक, पालक, पोषक व स्तम्भ थे, स्वामी जी अन्वेषक, साधु, सेनानी, तपस्वी, मनस्वी, नेता, विजेता, दार्शनिक, वैद्य, ब्रह्मचारी, सुधारक, विचारक, दूरदर्शी, विभूति थे। मैं उनके रूप को किस विषय लिखूं।

१)मारीशस का राजनीतिक महत्त्व समझनेवाले सबसे पहले भारतीय नेता स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज थे।

२)मॉरीशस का सप्रमाण इतिहास व भूगोल में लिखनेवाले सर्वप्रथम भारतीय बेशक स्वामीजी ही थे।

३)भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सत्याग्रहियों से युद्धबंदियों जैसे व्यवहार करने की मांग करने वाले सर्वप्रथम राष्ट्रीय नेता स्वामीजी ही थे।

४) अंग्रेज स्वामी जी की इस मांग से खींच उठा और तत्क्षण महाराज को कारागार भेज दिया गया।

५)भारतीय स्वाधीनता संग्राम दुसरे महायुद्ध के दिनों में स्वामीजी पर हरयानवी सैनिकों के माध्यम से सेना में विद्रोह फैलाने का भी आरोप लगाया गया, स्वामी जी ने हरियाणा की जो यात्रा की थी, श्री सिद्धांत जी गुजर स्वामी ओमानंद जी आदि उनके कुछ विशेष भक्त बारी-बारी उनके साथ रहे।

६)देश एवं विदेश में राष्ट्रभाषा को सर्वाधिक प्रचारक पूज्य स्वामी जी नहीं दिए, दक्षिण भारत में आंध्र, मद्रास, केरल, मैसूर तथा अफ्रीका में जिन लोगों ने राष्ट्र भाषा के प्रचार की अलख जगाई उसमें अधिकतम संख्या स्वामीजी के शिष्यों की ही है।

७) मॉरीशस में हिंदी को शिक्षा संस्थाओं व राजकाज में दैनिक जीवन में स्थान दिलाने का कार्य स्वामीजी ने किया।

८)स्वामीजी ने आर्य समाज को सर्वाधिक साधु उपदेशक दिए।

९)भारतीय स्वाधीनता संग्राम में न्यायालय के अपमान के प्रथम सत्याग्रही अभी योगी हरियाणा प्रदेश के स्वाधीनता सैनिक श्री पंचराम जी वैदिक को कि सार्वजनिक जीवन के विशाल क्षेत्र को लानेवाले एवं अद्वितीय सारथी बनानेवाले स्वामीजी महाराज ही थे।

- अध्यक्ष, दयानंद मठ दीनानगर
जि.गुरदासपूर (पंजाब)

# अजमेर में ऋषिमेला सोत्साह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारी परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में ऋषिवर की पावन स्मृति में इस वर्ष का ऋषिमेला दि.१, २, ३ नवम्बर को विभिन्न कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। इस भव्य मेले का उद्घाटन (पहले दिन प्रात:) सभाप्रधान डॉ.वेदपालजी के करकमलों से ध्वजारोहण द्वारा हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत् के संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान, लेखक, सभा पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता भारी संख्या में उपस्थित थे।

तत्पश्चात् मुख्य में विभिन्न सत्र चलते रहे, तथा सरस्वती भवन में 'वेद में वर्णित ईश्वरस्वरूप एवं नाम' इस विषयपर वेदगोष्ठी के सत्र चलते रहे। मुख्य मंच से शिक्षा व राष्ट्रवाद, मानवनिर्माण व आर्य समाज, नारी उत्थान व आर्य समाज, आर्य समाज की प्रासंगिकता, म.दयानन्द की विश्व को देन, युवाओं की भूमिका आदि विषयों पर सम्मेलन हुए, जिनमें विभिन्न विद्वानों ने अपने मौलिक विचार रखे। सर्वश्री डॉ.सुरेन्द्रकुमारजी, श्री कमलेश अग्निहोत्री, डॉ.उषा शर्मा 'उषस्', डॉ.सूर्यादेवी चतुर्वेदा, उत्तमा यति, सभामंत्री कन्हैयालाल आर्य, डॉ.विनय विद्यालंकार, श्री विनय आर्य, डॉ.राजेंद्र विद्यालंकार, श्री रामपालजी आर्य, सभाप्रधान डॉ.वेदपालजी, आचार्य विजयपालजी, पं.रामनिवासजी गुणग्राहक, डॉ.महावीरजी (पूर्व कुलपति, उत्तराखंड सं.वि.वि.), डॉ.महावीरजी 'मीमांसक' आदि विद्वानों ने श्रोताओं को सम्बोधित किया। मेले के दौरान कई विद्वानों को विभिन्न पुरस्कार प्रदान कर उनका अभिनन्दन किया गया।

उल्लेखनीय है कि एम.डी.एच.के चैयरमैन महाशय धर्मपालजी ऋषि को श्रद्धांजलि देने हेतु इस समारोह में पधारे थे, उन्होंने सभी के आग्रह पर परोपकारिणी सभा के संरक्षक को स्वीकार किया और सभा को आर्थिक दृष्टि से बलवती बनाने हेतु उन्होंने स्थिरनिधि के लिए ३५ लाख रूपयें की राशि प्रदान करने की घोषणा की। ऋषिमेले में महाराष्ट्र, केरल, छत्तीसगड, बिहार, हरियाणा, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, गुजरात, दिल्ली आदि राज्यों से आर्यजन पधारे थे।

**आगामी वर्ष का ऋषिमेला दि.२० से २२ नवम्बर २०२० को मनाया जायेगा।**

-० शोक समाचार ०-

# आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश का निधन

आर्य जगत् के वेद व्याकरण, दर्शनशास्त्र व कर्मकाण्ड के मूर्धन्य वैदिक विद्वान आचार्य श्री सत्यानन्दजी वेदवागिश का दि.२३ दिसम्बर २०१९ को प्रात: दु:खद निधन हुआ। वे ८६ वर्ष के थे। उनके पार्थिव शरीर पर जयपूर के करणी पैलेस श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक पद्धति से अंतिम संस्कार किया गया।

पण्डित जी का जन्म १० अक्टूबर १९३३ को राजस्थान में अजमेर जिले की लीडी नामक ग्राम में श्री ओंकार सिंह आर्य एवं श्रीमती सुगनीबाई के कृषक परिवार में हुआ। आरम्भिक शिक्षा लीडी में होने के पश्चात् सन १९४३ में स्वामी व्रतानंद जी के गुरुकुल चित्तौडगढ में प्रवेश लिया। यहाँ आपने निरन्तर १४ वर्ष तक पाणिनीय व्याकरण (महाभाष्य पर्यन्त), निरुक्त, छन्द, दर्शन एवं वेदादि शास्त्रों का आर्ष विद्या का अध्ययन किया और वेदवागीश की उपाधि प्राप्त की। आपके प्रमुख गुरुजन पं.शोभित मिश्र, पं.शंकरदेवजी, पं.भीमसेनजी आदि थे। गुरुकुलीय शिक्षा के पश्चात् आपने एम.ए. आदि की राजकीय परीक्षाएँ उत्तीर्ण की।

आपने विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन कार्य किया। साथ ही जिज्ञासु छात्रों को अष्टाध्यायी-महाभाष्य की पद्धत से पढाने की प्रक्रिया सतत बनी रही। कुछ काल तक परोपकारिणी सभा में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के संशोन का दायित्व भी सम्भाला।

आप संस्कृत व्याकरण के प्रौढ विद्वान एवं उत्तम वक्ता थे। बहुत काल तक आप स्वतंत्र रूप से धर्मोपदेश तथा संस्कारादि कृत्य करते करवाते रहे। आचार्य निरंजन देव(शङ्कराचार्य) आदि से आपके अनेक शास्त्रार्थ हुए। आपने पीराणा सम्प्रदाय के आचार्यों के साथ भी शास्त्रार्थ कर चुके हैं। आपने नामनिधि, अंत्येष्टि संस्कार, पाणिनीय शब्दानुशासनम्, दयानन्द वेदभाष्य-भावार्थ प्रकाश(दो खण्ड), बुद्धि निधि, दयानन्द दृष्टान्त निधि, सुक्तिनिधि, भक्ति-सत्संग, कीर्तन, वेदसाहाय्यनिधि आदि ग्रन्थ लिखे। अनेकों महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन भी आपने किया। वृद्धावस्था में भी आप सतत लेखन, स्वाध्याय आदि में व्यस्त रहते थे।

(जीवन परिचय साभार : आर्य लेखन परिचय - आचार्य आनन्द प्रकाश)

– विश्वप्रिय वेदानुरागी

***

## संपादक अश्विनीकुमार चोपडाजी का निधन

सुप्रसिद्ध वरिष्ठ पत्रकार, पूर्व लोकसभा सदस्य तथा प्रसिद्ध समाचार पत्र, पंजाब केसरी के संचालक एवं संपादक श्री अश्विनीकुमारजी चोपडा का दि.१८ जनवरी २०२० को निधन हो गया। वे ६३ वर्ष की आयु के थे। श्री चोपडाजी आर्य समाजी परिवार के वैदिक विचारों की धरोहर के संपोषक थे। दयानंद सरस्वती जी के सच्चे भक्त और सत्य पर आधारित लेखनी के धनी योद्धा थे। आपका निष्ठावान व्यक्तित्त्व मानवमात्र के लिए प्रेरणाप्रद है।

## राव हरिश्चंद्रजी आर्य का देहावसान

आर्य जगत् की विभूति और आर्य सम्मान पुरस्कारों द्वारा प्रतिवर्ष अनेक विद्वानों को प्रभूत धनराशि से सम्मानित करके आर्यजगत का गौरव बढानेवाले, अनेक गुरुकुलों, गौशालाओं, अनाथाश्रमों के संरक्षक व पोषक, नागपुर महाराष्ट्र के आर्य उद्योगपति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य आर्यनेता श्री राव हरिश्चंद्र आर्य जी का निधन दि.२४.१२.२०१९ को दोपहर १ बजे नागपुर में हो गया। प्रतिवर्ष वे अपने परिवार की ओर से आर्य विद्वानों व सन्यासियों को आर्यभूषण सम्मान प्रदान करते थे। महाराष्ट्र सभा के पूर्व प्रधान पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी इस पुरस्कार से सम्मानित हो चुके है। नागपुर में आर्य समाज की गतिविधियाँ बढाने में श्री आर्यजी का काफी सक्रिय येागदान रहा है। उनका अन्तिम संस्कार २५ दिसम्बर २०१९ को उनके पैतृक गांव बीघोपुर नजदीक नांगल चौधरी जिला महेंद्रगढ (हरि.)में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

## पं.रतिराम शर्मा का निधन

वैदिक धर्म के उपासक, आर्य समाज के दीवाने और प्रचारक आर्यरत्न प.रतिरामजी शर्मा का ३० दिसम्बर २०१९ को देहावसान हो गया। वे ९२ वर्ष के थे। उत्तर बंगाल और नेपाल में आपने जगह-जगह पर आर्यसमाज की स्थापना की है। समाजसेवा के क्षेत्र में भी आपका अविस्मरणीय योगदान है।

## गजानन्दजी आर्य का निधन

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, दानशूर आर्यश्रेष्ठी, लेखक एवं परोपकारिणी सभा अजमेर के संरक्षक तथा पूर्व प्रधान श्री गजानन्दजी आर्य का दि.६ जनवरी २०२० को देहावसान हो गया। वे ९० वर्ष के थे। श्री आर्यजी महर्षि दयानन्द के परम अनुयायी तथा वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञाता, मर्मज्ञ लेखक थे। साथ ही वे त्याग, समर्पण व उदारता की प्रतिमूर्ति थे। जीवनभर उन्होंने आर्य समाज के तत्त्वों का पालन किया। कोलकाता में आप वस्त्रों के प्रसिद्ध व्यवसायी व उद्योजक के रूप में जाने जाते हैं। आप द्वारा स्थापित 'इकॉनॉमिक ट्रांसपोर्ट आर्गेनाईजेशन' यह परिवहन व्यवसाय अन्यों के लिए भी आदर्श बन चुका है। आर्य समाज कोलकत्ता आपने आगे बढाया साथ ही अजमेर स्थित परोपकारिणी सभा को भी आपने प्रगति के शिखर पर पहुंचाया। सात्त्विकता, सरलता, सादगी एवं सदाचार आदि गुण आप में ओतप्रोत थे। सभा के साथ ही अन्य संस्थाओं को भी आपने आर्थिक सहयोग दिया। आपके देहावसान से आर्यजगत् व परोपकारिणी सभा की अपूरणीय क्षति हुई है।

**उपरोक्त सभी दिवंगत आत्माओं को महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं इन सभी को श्रद्धावनत नमन..!**

**महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं ऋषि दयानन्द बोधपर्व पर उस महान युगपुरुष को शत्‌शत् अभिवादन !**

**सभी आर्यजनों को हार्दिक शुभकामनायें..!**

आर्य कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि, वे अपनी-अपनी आर्य समाजों में दि.१८ फरवरी को महर्षि दयानन्द का जयन्ती दिवस मनावें तथा दि.२१ फरवरी को ऋषि बोध पर्व उत्साह के साथ मनावें। इन अवसरों पर यज्ञ, भजन, प्रवचन तथा छात्रों व बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करें..!

**- महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा**

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

**श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !**

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर संशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

# महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

( पंजीयन-एच. ३३३/२.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९.
स्थापना ५ मार्च १९७७)

## मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

॥ओ३म्॥

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

## * मराठी विभाग *

### * उपनिषद संदेश *

## विषयांपासून निर्लेपभाव

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चक्षुषैर्बाह्यदोषैः।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्य।।

अर्थ – ज्याप्रमाणे साऱ्या दृश्यमान जगाला दर्शनशक्तीचे मूळ कारण असलेला सूर्य हा डोळे व इतर इंद्रियासंबंधींच्या बाह्य दोषांनी प्रदूषित होऊ शकत नाही, त्याचप्रमाणे समग्र प्राणिमात्रांचा अंतर्यामी परमेश्वर सर्व प्राण्यांच्या दोषांपासून दूर आहे आणि सांसारिक दुःखांनी तो कधीही दूषित होऊ शकत नाही. (कठोपनिषद-५/११)

### * दयानंद वाणी *

## पाखंडी बुवा-बाबा...!

जोपर्यंत वर्तमानकाळी व भविष्यकाळी संन्यासी लोक उन्नतिशील बनणार नाहीत, तोपर्यंत आर्यावर्त्ततील व इतर देशांतील मानवांचे खरे कल्याण होणार नाही. वेदादी शास्त्रांचे अध्ययन-अध्यापन, ब्रह्मचर्यादी आश्रमांचे यथावत अनुष्ठान व सत्योपदेश यांच्यामुळे माणसांची प्रगती होत असते. या गोष्टी अंमलात जात असतील, तरच कोणत्याही देशाची उन्नती होते. लक्षात ठेवा! बुवाबाजी, मूर्तिपूजा वगैरें सारखे अनेक पाखंड तुमच्या डोळ्यासमोर घडत आहेत. उदा. एखादा धंदेवाईक वृत्तीचा साधू स्वतः सिद्ध पुरुष असल्याचे जाहिर करतो आणि निपुत्रिकांना मुले होतील, अशी किमया आपल्याजवळ असल्याचे सांगतो. तेंव्हा अनेक स्त्रियां त्याच्याकडे जातात आणि हात जोडून पुत्र प्राप्तीसाठी प्रार्थना करतात. मग ते बाबाजी सर्वांना मुलगा होईल, असा आशीर्वाद देतात. त्यांच्यापैकी जिला पुत्र होतो, ती असे समजते की,बुवाच्या आशीर्वादाने तो झाला आहे. पण हे सर्व धादांत लबाड आहे. यांपासून सावध राहावे.

(सत्यार्थ प्रकाश-११वा समुल्लास)

# म.दयानन्द जयंती व बोधपर्व- चिंतन

**- राजवीर शास्त्री**

धार्मिक प्रवृत्तीच्या मूळशंकरने वयाच्या १४ व्या वर्षी महाशिवरात्रीच्या दिनी जागरण व उपवासाचे व्रत धारण केले आणि आतापर्यंत इतिहासात जे घडले नाही, ते घडवून व दाखवून दिले. मूळशंकरास या घटनेमुळे बोध प्राप्त झाला. तो बोध त्याच्या जीवनाला नवीन कलाटणी देणारा ठरला. पुढे चालून हाच मूलशंकर 'महर्षी दयानंद सरस्वती' या नावाने लोकप्रिय झाला. एवढेच नव्हे तर महाशिवरात्रीलाही **'ऋषी दयानंद बोधरात्री'** अशी नवी ओळख प्राप्त झाली. सहसा जागरण म्हणजे रात्रभर न झोपणे असा अर्थ घेतला जातो, पण अज्ञानी न राहणे म्हणजे जागरण हा अर्थ दयानंदांना उलगडला. आपण भगवान शिवजीविषयी जे ऐकून होतो, ते अज्ञानमूलक असून वास्तविक सत्य वेगळेच आहे, हे त्यांना त्या रात्री जी घटना घडली, त्यावरून उमगले आणि त्याच क्षणी सत्याचा शोध घेण्याची तीव्र जिज्ञासा निर्माण झाली. त्याच घटनेमुळे या बालकाने सत्याचा शोध देखील सुरु केला. यासाठी त्याने आपले घर आणि गावही सोडले. सोबतीला कोणीही नाही. कुठेही कोणाची ओळख नाही. जवळ पैसा अडका सुद्धा नाही. शिवाय कुठे जायचे हे देखील ठाऊक नाही. यावरून त्यांना या शोधयात्रेत किती व कशा प्रकारच्या अनंत अडचणी आल्यास असतील, याचा अंदाज लावता येतो. परंतु मनात प्रभु दर्शनाचा ध्यास होता, तनात नवा जोश होता. त्याच्या जोरावर त्यांनी त्या संकटावर मात केली. अन् अखेर उपवासाचे व्रत त्यांनी सार्थक केले. सत्यापर्यंत पोहोचण्यात ते कमालीचे यशस्वी ठरले.

महाशिवरात्रीचा शाब्दिक अर्थ होतो **'महान कल्याणकारक ज्ञान देणारी रात्री'**! रात्री या शब्दाविषयी अंध:कार व अज्ञान असे दोन अर्थ प्रचलित आहेत, परंतु वैदिक ग्रंथामध्ये ज्ञान व दान या अर्थानेही रात्री या शब्दाचा प्रयत्न आढळतो. ज्ञानपूर्वक कर्म व ज्ञानाचे दान या दोन्ही गोष्टी कल्याणकारक आहेत. गुरु विरजानंद दंडी यांच्या सेवा-सान्निध्यात राहून दयानंदांनी वेदाध्ययन केले. मनातील सर्व शंकाचे समाधान झाले. दिव्य प्रकाशाने जीवन उजळले. ते मंत्रदृष्टा झाले. अलौकिक अशा या शिष्याकडून गुरुजींना एक वेगळीच अपेक्षा होती. दयानंदाने मिळविलेल्या ज्ञानाचा उपयोग

जनकल्याणासाठी करावा, यासाठी त्यांनी त्याकडून गुरुदक्षिणा म्हणून अख्खे जीवनच मागितले आणि दयानंदांनी ते सहर्ष देऊनही टाकले.

गुरु विरजानंदांनी गुरुदक्षिणा काय मागितली? उलट त्यांनी स्वामी दयानंदाला वेदोद्धारक, वैदिक धर्म प्रसारक, समाजसुधारक, स्वातंत्र्याचे ध्वजवाहक व जगद्गुरु वगैरे अशा अनेक पैलुंनी प्रकाशित होण्याची संधीच जणू दिली आणि स्वामी दयानंदांनी त्या संधीचे सोनेही केले. दयानंदांनी गुरुजींची आज्ञा पालन करून एकीकडे आपल्या गुरुजींचे नाव आणि त्यांची किर्ती जगात वाढविली, तर दुसरीकडे गुरुजींच्या ऋणातून उतराई देखील झाले. संपूर्ण भूमंडळात वेदांचा विचार पोहोचावा, या उद्देशाने त्यांनी १८७५ साली आर्य समाजाची स्थापना केली. वेदांच्या ज्ञानाने जगातील सर्व मानवांना ओतप्रोत करणे याला त्यांनी आपला परमधर्म मानले. वेदांची आज्ञा म्हणजे ईश्वराची आज्ञा! असे मानून त्या आज्ञेचे त्यांनी मनोभावे पालन केले. त्यामुळे गुरुभक्ती, ईश्वरभक्ती व देशभक्तीचे ते एक श्रेष्ठ उदाहरण ठरले. सर्वांसाठी आप्तपुरुष ठरले. त्यांचे जीवन खरोखरच धन्य झाले. पण आपले काय? स्वामीजींनी जशी आपल्या कर्तृत्वाने गुरुभक्ती सिद्ध केली, तसेच त्यांच्या अनुयायांनी आर्य समाजाच्या माध्यमातून आपली गुरुभक्ती, राष्ट्रभक्ती व ईश्वरभक्ती सिद्ध करण्यासाठी तत्पर राहावयास हवे. आर्य समाजाची स्थापना, सत्यार्थप्रकाश ग्रंथांची रचना, शास्त्रार्थ, पाखंड खंडन अभियान, प्रवचने आदी जो प्रपंच(प्रयत्न) त्यांनी केला, त्याचा काय अभिप्राय होता? त्यांना काय अपेक्षित होते? हे आपण सर्व आर्य जनांनी व स्वामीजींच्या अनुयायांनी जाणून घेणे गरजेचे आहे.

सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथाच्या अकराव्या समुल्लासात ते म्हणतात, 'जो उन्नति करना चाहे, तो आर्य समाज के साथ मिलकर, उसके उद्देश्यों के अनुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ नहीं लगेगा। इसलिए आर्य समाज जैसा आर्य्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण दूसरा कोई हो नहीं सकता। इसलिए समाज को यथावत सहायता देवे, तो बहुत अच्छी बात है। क्योंकि आर्य समाज का सौभाग्य बढाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।' आपल्या **'स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाश'** या लघुग्रंथात शेवटी ते लिहितात -'जो मत-मतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगडे हैं, उनको मैं प्रसन्न नहीं करता, क्योंकि इन्हीं मतवालों

ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा के परस्पर शत्रु बना दिया है। इस बात को काट सर्व सत्य का प्रचार कर, सबको ऐक्यमत में करा, द्वेष छुडा, परस्पर में दृढ प्रीतियुक्त कराके, सबसे सबको सुख लाभ पहुंचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा, सहाय और आप्तजनों की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जावे, जिससे सब लोग सहज से धर्म, अर्थ, मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहे। यही मेरा मुख्य प्रयोजन है।' या स्पष्टीकरणातील स्वामीजींच्या वक्तव्यावर चिंतन करण्याची आज गरज आहे.

आर्य समाजाला जीवंत ठेवणे, सशक्त व सक्रिय ठेवणे हे एकट्याचे काम नाही, तर अनेकांकडून अनेकप्रकारच्या सहयोगाची गरज आहे आणि आपली जशी आर्य समाजाला गरज आहे, तशी आपल्यालाही आर्य समाजाची आवश्यकता आहे. कारण आर्य समाज हा व्यष्टी आणि समष्टीच्या उन्नतीचे कारण आहे, हे समजून घेतले पाहिजे. **'सबकी उन्नति में अपनी उन्नति'** चे गमक ज्यांना कळाले, तो असे कधीच म्हणणार नाही की, आर्य समाजामध्ये गेल्यावर मला काय मिळेल? किंवा आर्य समाजाने मला काहीच दिले नाही. उलट आर्य समाजासाठी मला कांहीतरी केले पाहिजे आणि खरच आपण कांही करतो का? याचे चिंतन व्हावयास हवे. आपल्या वर्तनामुळे आर्य समाज कलंकित होणार नाही वा निस्तेज होणार नाही, याची आपण काळजी घेतो का? मी पदावर राहील किंवा न राहील? पण आर्य समाज जिवंत राहिला पाहिजे. आर्य समाजाचा ध्वज उंच फडकला पाहिजे, असे आपल्याला मनापासून वाटते का? आर्य समाजाचे काम व स्वत:चे घरचे काम हे दोन्ही काम एकदाच उभे राहिले तर वीर तानाजी मालुसरे प्रमाणे 'आधी लगीन कोंढाण्याचे, मग रायबाचे!' असे म्हणून आर्य समाजाच्या कामाला प्राथमिकता देतो का? किंवा रामप्रसाद बिस्मिल यांच्याप्रमाणे 'मी घर सोडेन, पण आर्य समाजाचा त्याग करणार नाही!' असे आपण म्हणतो का? आर्य समाजाच्या संघटनेसाठी आम्ही अनुशासन व शिस्त मान्य करतो का? बोधरात्रीच्या निमित्ताने तुम्ही-आम्ही सर्वांनी आपापल्या अंतरंगात या प्रश्नाच्या उत्तराचा शोध घ्यावयास हवा आणि जर का यात दोष आढळल्यास त्यांना दूर झटकावयास हवे. कारण आर्य समाजाच्या माध्यमातून आपल्याला मत-मतांतरवाल्यांचे तंटे

मिटवायचे आहेत. अविद्येचा नाश आणि वेदविद्येची वृद्धी करून सर्व मानवांमध्ये सख्य व ऐक्याची स्थापना करावयाची आहे. भूमंडळात सुख व शांतीचे साम्राज्य पसरावयाचे आहे. महर्षींची ही इच्छा अपूर्ण राहिली आहे. ती पूर्ण करण्याची जबाबदारी आम्हां सर्व आर्यजनांची आहे.

स्वामीजींच्या काळात मत-पंथवाद्यांची जी स्थिती होती, ती आजही जशास तशी आहे. तो काळ पारतंत्र्याचा होता. आज अतिस्वातंत्र्याचा आहे. एवढाच काय तो बदल! अज्ञान, अंध:विश्वास, दारिद्र्य, स्वार्थांधता, प्रतिष्ठा यात लोक एवढे गुरफटले आहेत की, काही सांगूच नका. त्यामुळे असत्याचा त्याग व सत्याचा स्वीकार करण्यास कोणीच तत्पर नाही. अविद्येचा नाश आणि विद्येची वृद्धी करण्यातही कोणाला रूची नाही. 'जो जे मति सापडला, तयाची तेचि थोर' हीच उक्ती प्रत्येकजण सार्थक करण्यात धन्यता मानतो आहे. जे विविध मत-पंथ व धर्म-संप्रदायांचे अनुयायी असा दावा करतात की, 'आम्हीच खरे! आमच्याच मान्यतेमुळे जगाचा उद्धार होऊ शकतो. आम्ही ज्या ग्रंथाला धर्मग्रंथ मानतो, तोच ग्रंथ ईश्वरीय ज्ञानाचा ग्रंथ आहे', असा अट्टाहास केला जातो. शास्त्रार्थ किंवा सुसंवाद करायला कोणीही तयार नाही. ते जे धर्मकार्य म्हणून किंवा सर्व दु:खांच्या निवारणाचा उपाय म्हणून जे करतात, त्यातून 'जो-जो दवा की, मर्ज बढता गया' हेच निष्पन्न होत असल्याचे दिसते. धर्मगुरुंची संख्या वाढली, मंदिरे, मशिदी, चर्च वाढले, तर हेच अपेक्षित असते की, तिथे अधर्म, अनाचार, अन्याय व आपले तंटे संपुष्टात यायला हवे. वकील व कोर्ट कचेऱ्यांची संख्या वाढली की, भांडणे आटोक्यात यायला हवीत. डॉक्टर व दवाखाने वाढले की रोगराई संपुष्टात यायला हवी. पण दुर्दैवाने तसे होताना दिसत नाही. याचा अर्थ त्यात कुठेतरी दोष आहे, हे नक्कीच. परंतु आर्य समाजाची संख्या आणि शक्ती वाढली तर निश्चितच हा दोष राहणार नाही. कारण आर्य समाजाची विचारधारा ही वेदोक्त आहे. त्यात निर्दोषता व सशक्तता आहे. पण करावे काय? ज्यांच्यासाठी आर्यसमाजाची स्थापना केली गेली किंवा ज्यांच्या कल्याणासाठी ईश्वराने वेदांचे ज्ञान दिले. त्यांनीच सध्या पाठ फिरविली आहे. याप्रसंगी एका शेतकऱ्याच्या अंतरंगातील बोल आठवतात -

**पेरले ते उगवत नाही,**
**उगवले ते टिकत नाही,**
**टिकलीच तरी रास त्याची,**

**बाजारात विकत नाही...**
**तरीही मुठ मुठ पेरतो आहे,**
**जगण्यासाठी कांहीतरी करतो आहे...**

शेतकऱ्यांची हालत आणि आर्य समाजाची ही परिस्थिती एकसारखीच झाली आहे. तरीही शेतकरी जशी आपली जिद्द सोडत नाही, तो आपल्या कामात जसा चिवट आहे, तीच जिद्द आणि तोच चिवटपणा आपण सर्व आर्यजनांनी अंगी बाळगला पाहिजे... तरच आम्ही स्वामीजींचे स्वप्न साकार करू शकूत. स्वामीजींच्या जयंती व बोधरात्री दिनानिमित्त आपण आर्य सर्वजण सिद्धांताचे पालन,संवर्धन व रक्षण करण्याची प्रतिज्ञा करू या! ईश्वर या कार्यात आम्हां सर्वांना शक्ती व बळ देवो व या कामी आप्तजनांची सहानुभूती व आशीर्वाद मिळत राहो, ही कामना...!

**– आर्य समाज, बाळीवेस,**
**सोलापूर मो.९८२२९९००११**

## 'वैदिक व्याख्यानमाला' उपक्रमास जोरदार प्रतिसाद

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने शालेय व महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांचा सर्वांगिण विकास साधावा व त्यांना नैतिक मूल्यांची जाणीव व्हावी, याकरिता आयोजित 'वैदिक व्याख्यानमाला' या प्रबोधनपर उपक्रमास यावर्षी जोरदार प्रतिसाद मिळाला. दि.२३ नोव्हेंबर ते २३ डिसेंबर या दरम्यान पार पडलेल्या कार्यक्रमांस आर्य जगतातील ओजस्वी युवा प्रवक्ते आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी यांना आमंत्रित करण्यात आले होते. श्री पुरुषार्थी यांनी विद्यार्थ्यांना सदाचार, सुसंस्कार, राष्ट्रीय व सामाजिक कर्तव्ये, आई-वडिलांची सेवा, शारीरिक व आत्मिक विकास यांसह विविध विषयावर अतिशय मार्मिक भाषेतून प्रबोधन केले. सभेतर्फे ठेवण्यात आलेल्या प्रचारवाहनातून वैदिक साहित्याचे अल्पदरात विद्यार्थ्यांना वितरणदेखील करण्यात आले. त्यांच्या समवेत असलेले भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंह चौहान, पं.नारायणराव कुलकर्णी, पं.सोगाजी घुन्नर यांनी या कार्यात मोठे सहकार्य केले. ठिकठिकाणच्या आर्य समाज कार्यकर्त्यांनी मोठ्या उत्साहाने स्थानिक शिक्षण संस्थांमध्ये व्याख्यानांचे नियोजन केले. तसेच शाळा व महाविद्यालयांनी देखील हे कार्यक्रम घडवून आणण्यात अतिशय मोलाची भूमिका बजावली. या सफल अभियानाकरिता सर्वांचे हार्दिक धन्यवाद! (पुढील अंकात कार्यक्रमांची यादी जाहीर होईल.)

# सुखाचे स्वरूप व त्याची प्राप्ती

- डॉ.ब्रह्ममुनी वानप्रस्थी

सर्व प्राण्यांची धडपड ही सुखासाठी आहे. म्हणूनच निर्जीव व सजीवांमध्ये हा फरक आहे. सुखाची इच्छा घेऊन या जन्म-मृत्यूच्या चक्रातून जीवात्मा फिरतो आहे. यावरून इच्छा करणारा तोच असणार हे स्पष्ट आहे. हे कटुसत्य अनेकांना कळले नाही. म्हणूनच जगात या बाबतीत अनेक वाद निर्माण झाले आहेत. शरीर, मन व इंद्रिये ही सर्व जड असून ती साधने आहेत. त्यांच्यामध्ये कर्तृत्त्व नाही. सुखाची मूळ इच्छा त्यांची नसून मूळ मालकाची आहे. सुख हा शब्द खऱ्या अर्थाने फार मोठा व्यापक आहे. त्याचा उपयोग पण वेगवेगळ्या संदर्भाने केला जातो. सुख, प्रसन्नता व आनंद हे वेगवेगळे शब्द आहेत, जे की बऱ्याच वेळा भिन्न अर्थाने वापरले जातात. त्यांचा तात्पर्य अनुकूल 'सुख' असा होतो. आल्हाददायक व प्रिय असेही त्यांचे अर्थ होतात. 'सु' व 'दुर्' या दोन उपसर्गांचे अर्थ चांगले व वाईट असे या शब्दाचे ढोबळ अर्थ होतात, पण वैज्ञानिकदृष्ट्या पाहिले तर सुखाची इच्छा इंद्रियांची नसून ती आत्म्याची आहे. संवेदना, भोक्तृत्त्व, कर्तृत्त्व हे सुद्धा त्यांचेच गुण आहेत. स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर व कारण शरीर हे तीन शरीर त्याची अनुभूती घेण्याचे साधन आहेत. स्थूल साधने ही स्थूल विषयाचा भोग घेतात, तर सूक्ष्म साधने सूक्ष्म विषयांचा भोग घेतात. आत्म्यामध्ये म्हणजेच कारण शरीरात सुद्धा या प्रिय व अप्रिय या दोन बाबी आहेत. आत्म्याला प्रिय वाटणाऱ्या गोष्टीला 'सुख' म्हटले पाहिजे, हेच खरे विज्ञान व हाच योग्य न्याय आहे.

इंद्रियांना त्यांचे विषय प्रिय वाटतात. इंद्रिये ही विषयभोगांमध्ये मग्न होऊ शकतात. स्थूल इंद्रियांना त्यांचे रूप, रस, गंध, स्पर्श शब्द इत्यादी विषय प्रिय आहेत. हे विषय बाधक आहेत. म्हणून स्थूल इंद्रिये उदा.नेत्र हे निसर्गाचे सुंदर दृश्य पाहण्यात सुख मानतात. कान हे मंजुळ व मधुर आवाज ऐकण्यात धन्यता मानतात. जिह्वा चांगले स्वादिष्ट पदार्थ खाण्यात सुख मानते. या वारंवारच्या भोगामुळे इंद्रियांची पुन्हा-पुन्हा भोगण्याची प्रवृत्ती वाढते. सूक्ष्म शरीर व मनाची प्रवृत्ती विषयांकडे वळते. वासना तिकडेच ओढ घेते. मनाला प्रभावित होऊन ते इंद्रियांना तसे करावयास सांगते.

विषयभोग जास्त झाले तर स्थूल इंद्रिये व शरीर लवकर खराब होतात. ते रोगी बनतात व त्यामुळे पूर्ण शरीरातच रोगराई पसरते. म्हणजेच याचा अर्थ असा झाला की इंद्रियांना प्रिय वाटणारे सुख सुद्धा जास्त प्रमाणात भोगणे योग्य नाही. त्याने निश्चितच दु:ख वाढते. म्हणून स्थूल वस्तूंचा भोग हा संयमाने केला पाहिजे. पण इंद्रियांची इच्छा मात्र निसर्गत:च वेगळी आहे. वासना वाढल्यानंतर व इंद्रिये दूषित झाल्यावर त्या इच्छा वगळ्या स्वरूपाच्या होतात. म्हणून स्थूल शरीरांचे स्वास्थ्य हे महत्त्वाचे आहे. कांही असले तरी शरीर व इंद्रियांच्या स्तरावरील सुख हे नेहमी स्वस्थ, निरोगी व दीर्घायुषी राहण्यात आहेत, हेच अंतिम सत्य आहे. स्वास्थ्यलाभ नसेल, तर हजारो भौतिक वस्तू, धनसंपदा, विषय या बाबी समोर आल्या तरी त्या प्रिय वाटणाऱ्या वस्तू सुद्धा नकोशा वाटतात. म्हणून खरे सुख स्वास्थ्यात आहे. हे स्वास्थ्य धनाने किंवा इतरत्र बाजारांत वगैरे कुठेच मिळत नाही. ते कोणीही कोणाला देऊ शकत नाही. ते स्वत:लाच प्रयत्नपूर्वक मिळवावे लागते.

सुख प्राप्त करण्याचे दुसरे ठिकाण म्हणजे सूक्ष्म शरीर होय. या सूक्ष्म शरीरात सूक्ष्म इंद्रिये, मन व बुद्धी आहेत. मन हे सर्व स्थूल इंद्रियांचे नियंत्रक (Controller) आहे. खऱ्या अर्थाने हे प्रमुख आहे. पण तो चंचल आहे. त्याच्या बहिर्मुख व अंतर्मुख अशा दोन वृत्ती आहेत. ते फार वेगवान आहे. ते स्थूल इंद्रिय व शरीरावर पण नियंत्रण ठेवते. म्हणजे स्थूलाचे स्वास्थ्य सुद्धा या सूक्ष्म शरीराच्या व मनाच्या स्वास्थ्यावर अवलंबून असते. इंद्रियांशी मनाचा जोपर्यंत संयोग होत नाही, तोपर्यंत कांहीच ज्ञान होत नाही. त्याच्या आज्ञेशिवाय इंद्रिये कार्य करीत नाहीत.

शरीर व मनात अनेक सूक्ष्म विषय पण आहेत. ईर्ष्या, द्वेष, मत्सर, छलकपट, लबाडी, बेईमानी, क्रूरता वगैरे विषय त्याला प्रिय आहेत. खोटे बोलण्याची प्रवृत्ती ही जेंव्हा जागृत होते, तेंव्हा मन त्याप्रमाणे विचार करते, पण लगेच आतून आवाज येतो, ''खोटे बोलू नये, ते वाईट आहे.'' सुंदर स्त्री पाहिली की काम जागृत होतो. त्यामुळे मन प्रभावित होते व लैंगिक विचार करायला सुरु करते. पण आतून त्यालाही 'हे चांगले नाही' असे सांगितले जाते. त्याचे ऐकले तर सर्व ठीक! नाही तर सूक्ष्म शरीरात तो विचार येतो न येतो, तोच मधून 'नाही हे चूक आहे, असे करायला नको' असा सल्ला मिळतो. तो न ऐकता पुढे जाण्याचा प्रयत्न मनाने केला की अंतरात्म्यात अस्वस्थता वाढते. समजा त्याचे न ऐकता

चोरी केलीच तर सतत आत प्रसन्नता व पश्चाताप चालू राहतो. स्थूलाचे दु:ख लवकर विसरते व ते नाहीसे देखील होते, पण सूक्ष्माचे दु:ख मात्र पुन्हा-पुन्हा त्रस्त करीत असते. म्हणून ते खूपच भयंकर असते. कोणाचे वाईट करण्याचा नुसता विचारसुद्धा आपणांस अस्वस्थ करतो. वाईट चिंतन करीत राहिल्यावर तर अस्वस्थता अधिकच वाढते.ही सूक्ष्म शरीरातील अस्वस्थता स्थूल शरीरात पण उत्पन्न होते.

एखाद्याचा ईर्ष्या किंवा द्वेष करण्याचा विचार जरी केला, तरी आपली Physiology बदलते व लगेच आत्म्यामध्ये अस्वस्थता जाणवू लागते. म्हणजेच वासनेच्या प्रवृत्तीमुळे मनाला जे प्रिय वाटते, ते आत्म्याला प्रिय वाटत नाही. म्हणून तो (आत्मा) मनाला 'असे करू नको' असे लगेच सांगतो, पण त्याचे न ऐकता जर मनाने केलेच. तर सूक्ष्म शरीरात अस्वस्थता निर्माण होते. बेचैनी व अशांती सुरु होते. त्याचा परिणाम झोप नाहीशी होण्यामध्ये होतो. पाचनसंस्था बिघडते व पूर्ण स्वास्थ्यच नष्ट होते. मनामध्ये विनाकारण भय, संशय, चिंता विकल्प इत्यादी (अज्ञानातून) निर्माण होतात. त्याचा सुद्धा परिणाम सूक्ष्म व स्थूल शरीरावर होत असतो. म्हणून सूक्ष्म शरीर अस्वस्थ व रोगी होते. मन बेचैन व अशांत असणे, निराशा येणे, उद्विग्रता येणे, उदास होणे ही सर्व लक्षणे दु:खांची व रोगांची आहेत. जरी त्यांनाही या गोष्टी प्रिय वाटत असल्या तरी देखील त्यांचा परिणाम मात्र दु:खात आहे. म्हणून सूक्ष्म शरीरांचे सुद्धा स्वास्थ्य हे किती तरी महत्त्वाचे आहे. याचे स्वास्थ्य दोन्हींसाठी आवश्यक आहे. सूक्ष्म शरीरातील सुख प्राप्त करण्यासाठी सूक्ष्म शरीराचे स्वास्थ्य प्राप्त केले पाहिजे. तेही आपोआप मिळत नाही.याकरिता सूक्ष्म शरीराचे स्वास्थ्य काय आहे? हे जाणणे गरजेचे आहे. याविषयीचे ज्ञान झाल्याशिवाय हे शक्य आहे काय ? आज सारे जग इथेच फसले आहे. माणूस चांगला की वाईट याची सुरुवात येथूनच होते. जे कांही सूक्ष्म शरीरात आहे. ते सर्व चांगल्यावाईटाचे भांडवल आहे. म्हणून चांगले किंवा वाईट विचार अथवा प्रवृत्ती या गोष्टी येथूनच निर्माण होतात व शेवटी निर्णय घेतला जातो. आत्म्याच्या आवाजाप्रमाणे मन व बाह्य इंदिये या सर्वांनी ऐकले नाही, तर सर्वच स्तरावर दु:ख निर्माण होते. हा निर्णय ज्याचे त्याला घ्यावा लागतो. दुसऱ्याकडून केवळ प्रेरणा मिळू शकते.

आत्म्याच्या स्तरावरील सुख हे सूक्ष्म

व स्थूल शरीर यांना स्वस्थ ठेवण्यात आहे. कारण तोच भोक्ता व सुखाची इच्छा करणारा आहे. पण हे सुख भौतिक वस्तू व स्थूल विषयांमुळे निर्माण झालेले असो की सूक्ष्म विषयांमुळे! दोन्ही स्तरावरील सुख आवश्यक असेल,तर ते या दोन्ही स्तरांवरील साधनांना स्वस्थ व तंदुरुस्त ठेवण्यांवर आणि योग्य दिशेने वापरण्यावर अवलंबून आहे. आनंद प्राप्त करणे ही आत्म्याची स्वत:ची इच्छा आहे. हा आनंद भौतिक सुखापेक्षा वेगळा आहे. विषयभोगांमध्ये हा आनंद नसून तो त्यागात आहे. खाण्यापेक्षा, खाऊ घालण्यात आणि शेवटी परमेश्वराच्या सान्निध्यामध्ये राहण्यात आहे. परमात्मा सच्चिदानंद आहे. आत्मा हा त्याच्या आनंदाचा भूकेला आहे. त्याची ही उत्कट इच्छा आहे. त्यांच्या जवळ बसण्याची इच्छा जर तो पूर्ण करू शकला नाही, तर त्याला आनंद मिळणार नाही. पाहिजे ते न मिळल्यास तो निश्चितच दु:खी होईल. भौतिक पदार्थांपासून बनलेली साधने ही वस्तूंचा विचार करतात. त्यांचे जड विषय हे बाह्य आहेत. आत्मा चेतन असून त्याचा महाचेतन हा विषय आहे. महाचेतनाकडे जाण्यासाठी व आनंद प्राप्त करण्यासाठी जर स्थूल शरीर व सूक्ष्म शरीर साथ देतील व सहकार्य करतील आणि जर काय मन अंतर्मुख होऊन सुखी आणि स्वस्थ राहील. अन्यथा तो अस्वस्थ होईल. म्हणून खरे सुख स्वस्थ राहण्यात आहे. ते प्रयत्नपूर्वक मिळवावे लागते.

सारे जग आज सुख बाहेर या जगामध्ये शोधत आहे, पण खरे सुख संयमात व स्वस्थ राहण्यात आहे. शाश्वत सुख सदाचारामध्ये आहे. अनाचारामुळे, बेईमानीमुळे तर पैसा व सत्ता अमाप मिळेल. पण यामुळे खऱ्या अर्थाने सुख मिळणार नाही. परमेश्वराच्या न्यायालयात त्याचा न्याय वेगळा आहे. त्याची Currancy वेगळी आहे. प्रचलित नोटा व बहुमत हे कांही Currancy नव्हे! त्याची जी व्यवस्था आहे, त्या व्यवस्थेत काटेकोर नियम व उद्दिष्टे आहेत. सर्व कांही त्याच्या प्रमाणेच चालते. म्हणूनच वनामध्ये झोपडी बनवून राहणाऱ्या व दिसायला साधे व जंगली वाटणाऱ्या लोकांनी जे सुख स्थूल, सूक्ष्म, जड व चेतन स्तरावर उपभोगले, ते सुख आजचे धन-दौलतवाले व मोटार-गाडीवाले श्रीमंत लोक उपभोगू शकत नाहीत आणि त्यांना ते मिळू शकत नाही. कारण खरी सुखे ही आत्म्याला प्रिय वाटणाऱ्या आध्यात्मिक तत्त्वांच्या आचरणातच आहेत.

**– आर्य समाज, परळी-वै.**

# अ.भा. साहित्यसंमेलनात आर्य साहित्य केंद्र

उस्मानाबाद येथे दि.९, १०, ११ जानेवारी २०२० रोजी पार पडलेल्या अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलनात महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे वैदिक साहित्याचे व आर्य ग्रंथाचे भव्य असे स्टॉल लावण्यात आले होते. आर्य कार्यकर्ते श्री रणजितजी आर्य यांच्या प्रेरणेतुन व प्रयत्नांतून हा उपक्रम यशस्वी झाला. स्थानिक उस्मानाबाद आर्य समाजाचे भरीव योगदान याकरिता लाभले. श्री ओम कुरूडे (नांदेड) व श्री वशिष्ट आर्य (अंबाजोगाई) यांनी मोठ्या प्रमाणात वैदिक साहित्य विक्रीसाठी ठेवले व साहित्याचा मोठ्या प्रमाणात प्रचारही केला. ग्राहकांना वैदिक साहित्याचे महत्त्व पटवून देत या दोन्ही पुस्तक विक्रेत्यांनी आपल्या साहित्याचा अभिनव पद्धतीने प्रचार केला.स्टॉल समोर येणाऱ्या वाचक ग्राहकांना माहितीपर ट्रक्टचे मोफत वितरण करण्यात आले. सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे, उपप्रधान श्री अर्जुनराव सोमवंशी, उपमंत्री श्री शंकरराव बिराजदार, उस्मानाबाद आर्य समाजाचे मंत्री श्री विजयकुमार बंग, कोल्हापुरचे आर्य युवक श्री महेश आर्य, वैदिक गर्जनाचे संपादक प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य, श्री वेदमुनिजी, श्री निपाणीकर, प्रा.डॉ.चंद्रशेखर लोखंडे, किशनराव राऊत, प्रा.डॉ.विनोदकुमार वेदार्य, विजयकुमार कानडे, सुबोध अंबेसंगे, दिगंबर रिद्दीवाले, प्रभाकर निपाणीकर आदी मान्यवरांनी साहित्य वितरणाकरिता सहकार्य केले. श्री रणजित आर्य, प्रीतम आर्य व श्री महेश आर्य यांच्या प्रयत्नातून प्रकाशित करण्यात आलेल्या कांही मराठी पुस्तकांचे वाचकांना मोफत वितरणही या साहित्य संमेलनात करण्यात आले.

विशेष म्हणजे या स्टॉलला प्रसिद्ध साहित्यिक कवी, लेखक आर्दीनी भेटी देऊन आर्य समाजाचे अभिनंदन केले व शुभेच्छा दिल्या. साहित्यिक श्री बाबा भांड, कवयित्री श्रीमती नंदिनी चांदवले, ट्रॅफीक पो.इ.श्री चव्हाण साहेब आर्दीनी या उपक्रमाचे कौतुक केले. या स्टॉलवर अनेकांनी बराच वेळ बसून पुस्तकांची विक्री व ट्रॅक्ट वितरण करण्याच्या कामी मोलाची भूमिका बजावली. श्री रणजितजी आर्य हे अमेरिकेतून नेहमीच या संदर्भात विधायक सूचना देत आर्यजनांचा उत्साह वाढविण्याचे कार्य करीत होते.

# प्राचार्य मैंदरकर व प्राचार्य वेदमुनिजींचा गौरव

सभेच्या नोव्हेंबर महिन्यात संपन्न त्रैमासिक बैठकीत वैदिक साहित्यांचा अनुवाद करणाऱ्या दोन वयोवृद्ध निवृत्त प्राचार्यांचा सभेतर्फे हृद्य सत्कार करण्यात आला. उस्मानाबादचेच रहिवासी असलेले श्री गोविंद घन:श्याम मैंदरकर (वय ९०) व श्री वेदमुनिजी वेदालंकार (वय ८८) हे आर्य समाजाचे अभ्यासू विचारवंत, लेखक व अनुवादक आहेत. या दोघांनाही शैक्षणिक क्षेत्रात प्राध्यापक व प्राचार्यपदांवर राहून अध्यापन व प्रशासन केले आहे. श्री मैंदरकर यांनी आजपर्यंत २० ग्रंथांचा व १०० हुन अधिक वैदिक लेखांचा मराठीत अनुवाद केला आहे. तर श्री वेदमुनिजी यांनी ४० ग्रंथांचा मराठीतून हिंदीत तर १० ग्रंथांचा हिंदीतून मराठी भाषेत अनुवाद केला आहे. श्री मुनिजी हे सध्या म.दयानंदांच्या वेदभाष्यांचा हिंदीतून मराठीत अनुवाद करीत आहेत.

सभेचे प्रधान श्री योगमुनिजींच्या शुभहस्ते या मान्यवरांना शाल व श्रीफळ प्रदान करून गौरविण्यात आले. श्री वेदमुनिजींना यापूर्वी हिंदी साहित्य अकादमीने २ पुरस्कार, तर महाराष्ट्र साहित्य परिषदेसह अन्य पुरस्कार मिळाले आहेत. यावेळी दिल्लीचा **'आर्ययुवक'** पुरस्कार मिळविणारे व राज्य आर्य वीर दल अधिष्ठाता श्री व्यंकटेश हालिंगे यांचाही सत्कार श्री मुनिजींनी केला.

# औराद(शहा.)च्या प्रधानपदी मुळे तर मंत्रीपदी डॉ.कच्छवा

औराद (शहाजानी) ता.निलंगा जि.लातूर येथील आर्य समाजाची त्रैवार्षिक निवडणुक नुकतीच १२ जानेवारी २०२० रोजी सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे यांच्या अध्यक्षतेखाली संपन्न झाली. त्यात सर्वानुमते प्रधानपदी श्री प्रतापराव मुळे यांची, तर मंत्रीपदी डॉ.प्रकाश कच्छवा यांची निवड करण्यात आली. संपूर्ण कार्यकारिणी पुढीलप्रमाणे – **प्रधान** – प्रतापराव सुभाषराव मुळे, **उपप्रधान**– भरतजी श्रीकिशनजी बियाणी, **मंत्री**– डॉ.प्रकाशजी कच्छवा, **उपमंत्री**–अशोक शिंदे, **कोषाध्यक्ष**–मधुसूदनजी बियाणी, **पुस्तकाध्यक्ष**–आदर्श गोविंदराव व्यास, **व्यायामप्रमुख**– लक्ष्मणराव शेषराव थेटे, **अंतरंग सदस्य** – सर्वश्री अपराजित भिंगोले, अनिल डोईजोडे, विश्वजीत शर्मा, साहेबराव मुळे, विनोद डोईजोडे, सौ.सुनिता आर्य, सौ.मंगला रविंद्र घायाळ. या नूतन पदाधिकाऱ्यांना आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसारासाठी शुभेच्छा...!

## परळीत व्यायाम व संस्कार शिबिर संपन्न

आर्य समाज परळी च्या दयानंद व्यायामशाळेतर्फे दिवाळीच्या सुट्ट्यांत 'व्यायाम व संस्कार शिबिर' घेण्यात आले. आर्यवीर दलाचे प्रमुख प्रशिक्षक प्रा.डॉ.जगदीश कावरे यांच्या प्रमुख मार्गदर्शनाखाली या शिबिरात जवळपास ५० विद्यार्थ्यांना व्यायामाचे विविध प्रकार, खेळ, योगासने, शस्त्र संचालन, लाठी-काठी आदींचे प्रशिक्षण देण्यात आले.सुभाषजी नानेकर व इतर प्रशिक्षकांचे या कार्यात फार मोठे सहकार्य लाभले. उद्घाटन व समारोप सत्राला आर्य समाजाचे पदाधिकारी व शहरातील प्रतिष्ठित मंडळी उपस्थित होते.

## उस्मानाबादमध्ये हिंदी विषयावर निबंध स्पर्धा संपन्न

आंतरराष्ट्रीय हिंदी दिनाच्या निमित्ताने आर्य समाज धाराशिव (उस्मानाबाद) व स्थानिक व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालयाच्या संयुक्त विद्यमाने राष्ट्रीय स्तरावर हिंदी निबंध स्पर्धा घेण्यात आली. या स्पर्धेचा विषय 'मॉरिशस के हिंदी प्रचार-प्रसार में आर्य समाज का योगदान' हा विषय ठेवण्यात आला होता. याकरिता विविध राज्यातून जवळपास ५२ निबंध आले होते. यात राकेशकुमार यादव-वडोदरा(प्रथम), कु.ऐश्वर्या बालाजी कन्नावार-आ.बाळापुर व कु.प्रिया संतोष वाघुले-औ.बाद(द्वितीय), कु.शालिनी सिद्राम थावरे-लोहारा व कु.विशाखा विजयकुमार बंग-उस्मानाबाद(तृतीय) या विजेत्या स्पर्धकांना अनुक्रमे रू.३०००, रू.२०००, रू.१००० ची पारितोषिके वितरीत करण्यात आली. यासाठी प्रा.डॉ.वेदकुमार वेदार्य यांनी प्रयत्न केले.

-० निधनवार्ता ०-

## विक्रम रेड्डी यांचे निधन

लातूर येथील आर्य समाजाचे कार्यकर्ते श्री विक्रम जगमोहन रेड्डी यांचे अल्पशा आजाराने दु:खद निधन झाले. त्यांच्या पश्चात पत्नी, दोन मुले, एक मुलगी, सुना व नातवंडे असा परिवार आहे. स्व.विक्रम रेड्डी हे आर्य समाजी परिवारातील सदस्य होते. त्यांच्या मातु:श्री स्व.गायत्रीदेवी व मामा स्व.बिपिनचंद्र चामले यांच्यामुळे श्री विक्रम यांना आर्य समाज व वैदिक विचारांचे संस्कार लाभले. आर्य समाज गांधी चौक तर्फे स्व.रेड्डी यांना श्रद्धांजली वाहण्यात आली.

## नागनाथराव मुळे यांचे देहावसान

मूळज ता.उमरगा येथील आर्य कार्यकर्ते श्री नागनाथराव शंकरराव मुळे यांचे दि.२२ नोव्हेंबर २०१९ रोजी वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. ते ८४ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात पत्नी, मुलगा, चार मुली,जावई व नातवंडे असा परिवार आहे. श्री मुळे हे उस्मानाबाद जिल्हा सहकारी बँकेचे निवृत्त चतुर्थश्रेणी कर्मचारी होते. गुंजोटीचे वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ते व निवृत्त मु.अ. श्री रमेशचंद्र ठाकूर आणि प्रांतीय सभेचे माजी मंत्री श्री दिनकररावजी देशपांडे यांच्या संपर्कामुळे ते आर्य समाजाकडे वळले. स्वाध्याय व चिंतनातून त्यांच्यात वैदिक सिद्धांत दृढतेने रुजले. म्हणूनच त्यांनी आपल्या मुलीचे आंतरजातीय विवाह केले व आर्य समाजातही सक्रीय सहभाग नोंदविला. अलीकडील काळात ते लातूरच्या एल.आय.सी. कॉलनीत वास्तव्यास होते. रामनगर लातूर आर्य समाजाचे पदाधिकारी श्री अनंत रामस्वरूप लोखंडे यांचे ते सासरे होते.त्यांच्या पार्थिवावर त्याच दिवशी खाडगांव रोडवरील स्मशानभूमीत वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. श्री ज्ञानकुमार आर्य यांनी हा अंत्यविधी संपन्न केला.

## रामकुंवरबाई तिवारी यांचे निधन

साकोळ ता.शिरुर अनंतपाळ जि.लातूर येथील स्वा.सै.पत्नी व शताधिक्याचे आयुर्मान लाभलेल्या ज्येष्ठ महिला नागरिक श्रीमती रामकुंवरबाई गुलाबप्रसादजी तिवारी यांचे दि.१८ डिसेंबर २०१९ रोजी वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. त्या सर्वाधिक १०५ वर्षाच्या होत्या. त्यांच्या मागे तीन नातू, चार मुली, जावई, सुन व नातवंडे असा परिवार आहे. श्रीमती रामकुंवरबाई या प्रेमळ, सुस्वभावी, धार्मिक, दानशूर आणि कर्तव्यदक्ष महिला म्हणून ओळखल्या जात. त्यांचे पती स्वा.सै.श्री गुलाबप्रसादजी हे प्रख्यात आर्यसमाजी कार्यकर्ते होते. जवळपास ४० वर्षे ते येथील आर्य समाजाचे प्रधान म्हणून कार्यरत होते. अशा आदर्श पतींना श्रीमती रामकुंवरबाईंनी गृहिणीच्या रूपाने मोलाची साथ दिली. त्यांच्या पार्थिवावर उदगीरचे पुरोहित पं.माणिकराव टोम्पे यांच्या पौरोहित्याखाली अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

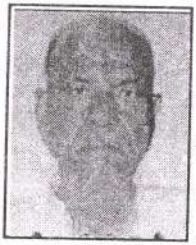

## गोरक्षनाथ महिंद्रकर यांचे निधन

लातूर येथील आर्य समाजाचे कार्यकर्ते व सामाजिक कार्याची जाण असलेले व्यापारी श्री गोरक्षनाथ महिंद्रकर यांचे दि.१४ जानेवारी २०२० रोजी प्रदीर्घ आजाराने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८३ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे ३ मुले, सुना व नातवंडे असा परिवार आहे. मूळचे बीदर(कर्नाटक) येथील रहिवासी असलेले श्री महिंद्रकर हे लहानपणापासूनच आर्य समाजकडे वळले. शिक्षणासोबतच ते शिलाई कामही करीत असत. प्रसिद्ध आर्य समाजी पं.रामचंद्रजी मंत्री (स्वामी स्वात्मानंदजी) यांच्या आग्रहामुळे ते १९६१ साली लातूरला आले आणि त्यांचा आर्य समाजाशी संपर्क वाढत गेला. श्रावणी पर्व, वार्षिकोत्सव, महासंमेलन, सभा इत्यादी विविध कार्यक्रमास ते सपत्नीक हजेरी लावत. श्रद्धेने यज्ञादी कार्यात सहभागी होत असत. सामाजिक कार्याची उदात्त भावना त्यांच्या अंतर्मनात दडली होती. म्हणूनच ते गोरगरीब मुला-मुलींच्या शिक्षण व विवाह कार्यासाठी भरपूर मदत करीत असत. एका गरीब मुलास तर त्यांनी आपल्या घरीच आश्रय दिला व त्याचे शिक्षण पूर्ण केले. श्री महिंद्रकर यांनी स्वामी स्वात्मानंदजी यांची मनोभावे सेवा केली. अशा सामाजिक व धार्मिक कार्याची जाण असलेल्या आर्य व्यक्तिमत्त्वाच्या निधनामुळे आर्य समाजाची हानी झाली आहे.

त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी लातूरच्या मारवाडी स्मशानभूमीत वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. सर्वश्री ज्ञानकुमारजी आर्य, प्रा.चंदेश्वर शास्त्री, शेरसिंह शास्त्री या पंडिताच्या पौरोहित्याखाली हा अंत्यविधी पार पडला. यावेळी लातूरच्या चारही आर्य समाजांचे पदाधिकारी, व्यापारी, नातलग व आप्तेष्ट उपस्थित होते.

## इंद्रजित परांडेकर यांचे निधन

लातूर येथील आर्य समाजाचे कार्यकर्ते व प्रसिद्ध सराफा व्यापारी श्री इंद्रजित आसारामजी परांडेकर यांचे दि.०१ फेब्रुवारी रोजी दुपारी १२.३०वा. हृदयविकाराने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ७० वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात पत्नी, तीन मुले, सुना, नातवंडे व दोन भाऊ असा परिवार आहे. आर्य

समाज गांधी चौकचे मंत्री श्री चंद्रभानू परांडेकर यांचे ते धाकटे बंधू होते. श्री इंद्रजितजी हे स्वभावाने शांत, परिश्रमी, मनमिळाऊ व सद्गृहस्थ होते. त्यांनी आपल्या सुस्वभावाने लातूर शहरात चांगला मित्र परिवार जोडला होता.

त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी १० वाजता शहरातील मारवाडी स्मशानभूमीत वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी आर्य समाजाचे पदाधिकारी, व्यापारी व मित्र आणि आप्तेष्ट मोठ्या प्रमाणावर उपस्थित होते. पं.चंद्रेश्वर शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली शांतीयज्ञ करण्यात आला.

## विश्वनाथराव वाघमारे यांचे निधन

आर्य विचारांचे कट्टर अनुयायी व सामाजिक कार्यात अग्रेसर असलेले निवृत्त शिक्षक श्री विश्वनाथराव मारुतीराव वाघमारे यांचे दि.२९ ऑक्टोबर २०१९ रोजी दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८२ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात पत्नी श्रीमती कमलबाई, तीन मुले, तीन मुली, सुना, जावई व नातु-नाती असा विशाल परिवार आहे. स्व.वाघमारे यांना अगदी लहानपणापासूनच आर्य समाजी विचारांचे बाळकडू मिळाले. वाघमारे घराणे तसे मुळचे चाकुरचे! त्यांचे वडील स्व.श्री मारुतीराव यांना उदगीरचे प्रसिद्ध क्रांतिकारी आर्य हुतात्मे भाई श्यामलालजी यांच्याकडून आर्य विचारांची व देशभक्तीची प्रेरणा मिळत राहिली. त्यामुळेच त्यांनी श्री विश्वनाथराव यांना शैक्षणिक व सामाजिक दृष्ट्या सुविकसित करण्याचा यशस्वीपणे प्रयत्न केला. शिक्षक म्हणून त्यांनी ठिकठिकाणी ज्ञानदानाचे कार्य केले. शेवटी ते परांडा येथे निवृत्त झाले व तिथेच स्थायिक झाले. श्री वाघमारे यांनी आपल्या सर्व मुला-मुलींना उच्च शिक्षण व सुसंस्कार प्रदान केले. त्यांची ज्येष्ठ कन्या श्रीमती आशा अरविंद कांबळे या प्रसिद्ध आर्य समाजी व दिवंगत खासदार तुळशीराम कांबळे यांच्या स्नुषा आहेत. तर एक कन्या पू.स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरुजी) यांचे शिष्य प्राचार्य डॉ.कमलाकर कांबळे यांच्या पत्नी आहेत. तर तिन्ही मुले डॉक्टर, प्राध्यापक व इंजिनिअर पदावर कार्यरत आहेत.

स्व.श्री वाघमारे यांच्या पार्थिवावर पं.ज्ञानकुमारजी आर्य यांनी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले.

**वरील दिवंगत आत्म्यांना महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेची भावपूर्ण श्रद्धांजली...!**
**आर्य समाज शोकाकुल परिवारांच्या दु:खात सहभागी आहे.**

आर्य लेखक एवं अनुवादक श्री वेदमुनिजी का सम्मान करते हुए सभा पदाधिकारी।

अनुवादक प्राचार्य श्री गोविंदराव मैन्दरकर का सम्मान करते हुए सभा पदाधिकारी।

परली में व्यायाम प्रशिक्षण शिविर में श्री सुभाषजी नानेकर का अभिनन्दन करते हुए आर्यजन।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/[illegible]0

सेवा में,
श्री. ____________________

____________________

____________________

____________________

प्रेषक –
**मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,**
आर्य समाज, परली–वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

**यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया ।**

## भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि !

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
**लोकमान्य शिक्षण संस्था, पानचिंचोली (जि.लातूर)**
के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्त्व
**पिताजी स्व.श्री.वासुदेवराव हनुमंतराव होलीकर** एवं
**माताजी स्व.श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवराव होलीकर**
की पावन स्मृति मे उनके सुपुत्र **प्रो.ओमप्रकाशजी होलीकर एवं परिवार**
की ओर से **वैदिक गर्जना मासिक** का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट